चकमक

अप्रैल, 1993

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 5.00

बिना हिसाब का एक दिन

शरद डडसेना, दसवीं, लोरमी, बिलासपुर, म. प्र.

गुरमीतसिंह राय, आठवीं, खरगोन, म.प्र.

निशांत सलूजा, पहली, चांपा, बिलासपुर, म.प्र.

इस अंक में

नाटक

8 ❑ बिना हिसाब का एक दिन

कविताएं

6 ❑ बेसमय बोलता है मुर्गा
16 ❑ जिज्ञासा
34 ❑ क्या कहती है चिड़िया

कहानी

26 ❑ कामचोर

धारावाहिक

35 ❑ जंगलनामा-2

हर बार की तरह

2 ❑ मेरा पन्ना
20 ❑ खेल कागज़ का
24 ❑ हमारे वृक्ष-14 : महुआ
25 ❑ खेल पहेली
30 ❑ माथा पच्ची

और यह भी

7 ❑ चित्रकथा : चप्पू
14 ❑ तुम भी बनाओ
17 ❑ पुरी की यात्रा
22 ❑ क्यों... क्यों : समापन
23 ❑ चित्रकथा : अंजोर
32 ❑ सवालीराम
33 ❑ चर्चा किताबों की

चकमक
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-8 अंक-10 अप्रैल, 1993
संपादक
विनोद रायना
सह-संपादक
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
संपादन सहयोग
टुलटुल विश्वास
कला-सज्जा
जया विवेक
उत्पादन/वितरण
कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा
एक प्रति : पांच रुपए
छमाही : पच्चीस रुपए
वार्षिक : पचास रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य,
ई-1/208, अरेरा कालोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.)
फोन : 563380

कागज़ : यूनिसेफ के सौजन्य से।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

यह अपना भोपाल है

मोहम्मद कासिम, बाग उमराव दूल्हा, भोपाल, म.प्र.

जलियांवाला बाग नहीं
यह अपना भोपाल है।

जलियांवाला बाग में तो
डायर ने थी गोलियां चलवाई।
किंतु भोपाल के भाई-भाई
हुए क्यों आपस में दंगाई?
कितने ही लोगों की करतूतें
डायर की बर्बरता की मिसाल हैं।

जलियांवाला बाग नहीं
यह अपना भोपाल है।

निष्ठुर क्यों हो गए थे तुम
क्यों कितनों के जीवन से खेला?
अपने को ही छलनी किया
हो गया यह कैसा झमेला?
होली में रंगना अच्छा है
अभी क्यों हुआ भोपाल लाल है।

जलियांवाला बाग नहीं
यह अपना भोपाल है।

☐ मनीषा यादव, आठवीं, भोपाल, म.प्र.

नेहा, पांचवीं, भोपाल, म.प्र.

भूत की घंटी

'भूत की घंटी' से चौंक गए न। भूत और घंटी, ये दोनों अलग-अलग शब्द हैं। कभी मैं ही नहीं मेरे घर के सारे बुज़ुर्ग इस भूत की घंटी से चौंक ही नहीं गए बल्कि मेरे घर के सभी छोटे से लेकर बड़ों का भोजन पानी ही बंद हो गया था। जब कभी मेरी दादी भूत के बारे में बताया करतीं तो मैं बड़े गौर से सुना करता और इसे कहानी समझता। मगर जब एक दिन भूत ने मेरे घर में घंटी बजाई तो बस सभी सयाने-परेशान हो गए। घंटी बजती और ढूंढने पर बंद हो जाती। यह पता न चल पाता कि घंटी बजी कहां से। दादी जी कहतीं, 'भूत की घंटी है।' चाचा जी कहते, 'भूत की पायल की आवाज़ है।' माता जी कहतीं कि 'चोर ने दरवाज़ा खटखटाया है।' दस लोग, दस प्रकार के विचार। मगर दूसरे दिन जब पुनः घंटी बजी तो उस दिन से सभी यही सोचने लगे कि 'यह भूत की ही घंटी की आवाज़ है।'

एक रात तो सारे गांव के लोग ही आ गए भूत की घंटी की आवाज़ सुनने। लोगों के पहुंचने पर आवाज़ आनी बंद। सभी डरांते। कोई कहता, 'घर छोड़ दो।' कोई कहता, 'घर बंधवा दो।' कोई कहता, 'ओझा बुलवा लो।' कोई कहता, 'उस जगह जाओ।' कोई कहता, 'इस जगह जाओ।' मेरे घर के लोग गए भी क्योंकि भूत की घंटी की आवाज़ जो बंद करवानी थी। मगर आने वाले आए और जादू-मंतर करके चले भी गए। फिर भी रात को भूत की घंटी बजती, बंद हो जाती। यही क्रिया नियमित चलती। सभी बुज़ुर्ग परेशान।

घंटी बंद हो तो कैसे हो? सभी के ज़हन में विचार रहता। घर-घर, मोहल्ले-मोहल्ले मेरे घर की प्यारी भूत की घंटी की चर्चा होती। मगर एक दिन भूत की घंटी से छुटकारा मिल ही गया। हुआं यूं कि मेरी छोटी बहन खेलते-खेलते दीवाल में टंगी हुई बैल के गले में बांधी जाने वाली घंटी उतार लाई। उसके बाद हमें घंटी की आवाज़ सुनाई नहीं दी। तब समझ में आया कि इसे ही चूहे उछल-उछलकर बजाया करते थे।

जब यह कहानी हम लोगों को पता पड़ी तो बहुत हंसी आई। मगर लोग तो यही कहते थे कि आपके घर को भूत ने छोड़ दिया है।

❑ विद्याधर द्विवेदी, नवमीं, पुरौना, रीवा, म.प्र.

मेरा पन्ना

मेरी अलमारी

मेरी अलमारी भूरे रंग की है उसमें मेरे खिलौने रखे रहते हैं। मेरी किताबें तथा कुछ अन्य सामान भी रखा रहता है। मेरी अलमारी में चार खाने हैं- दो में खिलौने, दो में किताबें। इंग्लिश और हिंदी के अलग-अलग खाने हैं। मेरी हिंदी की किताबें बहुत ही मोटी हैं। 'सोने की चाबी' यह किताब बहुत मोटी है। 'उक्राइनी लोक कथाएं' यह किताब हद से मोटी है। मगर मैं इसे पढ़ चुकी हूं। और भी ऐसी कुछ किताबें मेरे पास हैं जो मोटी हैं जैसे 'धातुओं की कहानियां'। मेरी अलमारी में चार कांच लगे हैं। मैंने उस पर अपना चित्र लगाया है। वह हरे, कत्थई और काले रंग का बना है। आपको बातों में मज़ा आ रहा होगा। आ रहा है ना! मेरी अलमारी के ऊपर भी काफ़ी सामान रखा रहता है।

❑ पारुल, आठ वर्ष, टीकमगढ़, म.प्र

मोना, चौथी, नई दिल्ली

मेरे बाबा, मेरी दादी

मेरे बाबा मुझे बहुत प्यार करते हैं। मेरी दादी भी मुझे बहुत चाहती हैं। और मैं भी उन्हें बहुत चाहती हूं।

मुझे मेरी दादी सुबह बहुत जल्दी उठाती हैं। मुझे जब दादी नहाने को कहती हैं, तो मैं पैर पटककर रोती हूं। क्योंकि मुझे ठंड लगती है। मेरे बाबा मुझे रोज़ गणित पढ़ाते हैं, दादी मुझे सोते समय कहानी सुनाती हैं।

❑ नेहा व्यास, सात वर्ष, बैतूल, म.प्र.

महुआ का तेल

महुआ के जंगल में बहुत सारे पेड़ होते हैं। वहां से हम गुल्ली को तोड़कर या नीचे गिरे हुए को उठाकर लाते हैं। गुल्ली पर डबल छिलका होता है। ऊपर के छिलके को निछोर देते हैं। फिर एक छिलका और होता है उसे पत्थर लेकर फोड़ते हैं। गुल्ली को अच्छी तरह सुखाते हैं। फिर उसे बोरे में भरकर जहां तेल निकालने वाले हैं वहां ले जाकर मशीन में डाल देते हैं। यहां एक स्टूल रहता है। उस पर बैठकर गुल्ली को डंडे से हिलाते हैं तो गुल्ली अंदर जाती है। मशीन के अंदर दो चक्के जैसे होते हैं। वहां पर गुल्ली गिरती है और अच्छी तरह पिसकर मशीन से दबा दी जाती है। तो उसका तेल निकल आता है। मशीन में एक छेद होता है। यह छेद नीचे होता है। इस छेद से तेल गिरता है। फिर पीपे में भरकर अपने घर लाकर तेल को अच्छी तरह एक कढ़ाई में उबाल लेते हैं। तेल में दो चार नींबू काट कर डाल देते हैं तो तेल का कडुवा लगना बंद हो जाता है। फिर हम इस तेल को बघारने के काम में लाते हैं और भजिया भी बनाते हैं।

❑ श्रावन कुमार इवने, चौथी, पावरझंडा, बैतूल, म. प्र.

जयन्त यादव, तीसरी, बावई, होशंगाबाद, म.प्र.

बेसमय बोलता है मुर्गा

रोज़ सबेरे
ठीक साढ़े दस बजे
हमारे मुहल्ले का
एक मुर्गा बांग लगाता है।
लोग उसे कोसते हैं/ गरियाते हैं
उस पर ठीकरे उछालते हैं।
मगर मैं उसकी बांग सुनते ही
बस्ता लेकर भाग पड़ता हूं
अपने स्कूल की ओर।
मुर्गे की वह बांग मेरे लिए
जैसे स्कूल की घंटी हो,
या अम्मा की मीठी झिड़की-
"अरे! अभी तक तेरा स्कूल का
टाइम नहीं हुआ?"
मुर्गे की वह बांग मुझे नहीं लगती-
"कूऽऽक ऽ डूं ऽऽ कूं ऽऽऽ"
बल्कि मुझे लगता है-
" स्ऽ कूऽ ल ऽ जा ऽऽ तू ऽऽऽ"
मैं उस मुर्गे का अहसान मानता हूं
सच उसे कितनी फ़िकर है
हम पढ़ने वाले बच्चों की
वह हमें सुबह सबेरे चार बजे नहीं
जगाता
हमारी मीठी नींद नहीं उड़ाता
मगर लोगों को उसका बेसमय
बोलना
अच्छा नहीं लगता
शायद इसीलिए
मुझे हमेशा इस बात का डर बना
रहता है
कि कहीं उसे इस परंपरा को
तोड़ने की
क़ीमत
अपनी जान से चुकानी
न पड़े!!

❑ राजनदेव महंत, आठवीं, घरघोड़ा, रायगढ़, म.प्र.

चप्पू

चित्रकथा :- अमित कोलकर

बिना हिसाब का एक दिन

[पात्र-पापा, मम्मी, बबली (पुत्र), पिंकी (पुत्री)। सोनू, मोनू-बबली, पिंकी के सहपाठी। मंच पर चारों बच्चे होम-वर्क करने में लीन।]

बबली : अब रहा गणित का होम-वर्क।

पिंकी : लो भई, अपन ने भी दूसरा काम ख़त्म कर लिया।

सोनू : जब तक गणित का काम नहीं हो जाता, काम अधूरा ही समझा जाता है।

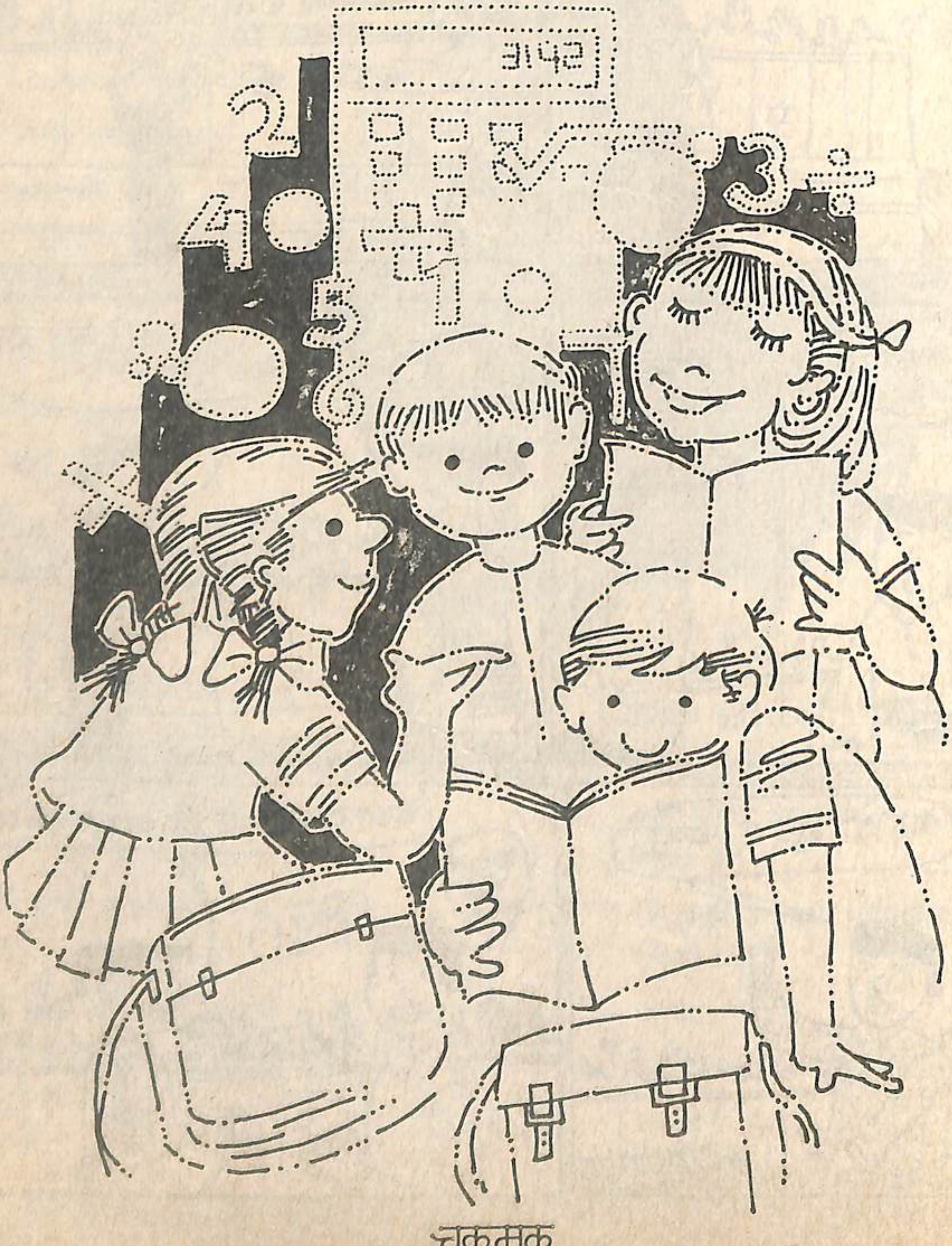

मोनू : गणित वाली टीचर क्लास में आते ही शुरू हो जाती हैं- ***(टीचर की नकल)*** जिन बच्चों ने होम वर्क पूरा नहीं किया, वे बेंच पर खड़े हो जाएं।

सोनू : गणित से ज़्यादा हमें टीचर से डर लगता है।

बबली : डरने की ज़रूरत नहीं - हम होम-वर्क पूरा करके स्कूल जाएंगे।

पिंकी : ए बबली ! पहले मैं होम-वर्क करूंगी। मुझे खेलने जाना है।

सोनू-मोनू : हमें कौन-सा यहां बैठना है!

बबली : मुझे भी पतंग उड़ानी है। पहले मैं काम करूंगा। कहां है अपना अलादीन का चिराग़?

पिंकी : वहां टेबिल पर रखा होगा। एक बात कहूं- हम सब मिलकर एक साथ काम कर लेते हैं।

बबली : न.. न... पहले मैं करूंगा।

सोनू : पहले मैं।

मोनू : पहले मैं।

पिंकी : पहले मैं, पहले मैं... चुप करो। जिसका काम ज़्यादा कठिन होगा वही पहले काम करेगा। साधारण जोड़, बाक़ी तो मुंह ज़ुबानी हो सकते हैं।

बबली : मुझे अट्टा-बट्टा के सवाल करने हैं।

सोनू : मुझे सई बट्टा के।

पिंकी : मुझे ब्याज के।

मोनू : मुझे प्रतिशत निकालना है।

पिंकी : ब्याज निकालना बहुत कठिन है।

मोनू : प्रतिशत निकालने में नानी याद आ जाती है।

बबली : नानी याद करो चाहे दादी- पहले सवाल मैं करूंगा। मुझे एक साथ पांच पतंग काटनी हैं।

पिंकी : कि पांच पतंग कटवानी हैं?

बबली : क्या बात कर रही है... अभी पिछले सप्ताह मैंने..

पिंकी : दो पतंग कटवाई थीं और पापा से कहा था- मैंने दो पतंग एक के बाद एक काट ली।

बबली : तुम्हें किसने कहा।

पिंकी : तुम्हीं ने।

बबली : नहीं, मैंने नहीं कहा।

पिंकी : तुम्हारी रोनी सूरत देखकर कोई भी बता सकता था कि तुम पतंग कटवाकर आ रहे हो।

[मम्मी का प्रवेश।]

मम्मी : अरे बच्चों! होम-वर्क पूरा कर लिया क्या?

पिंकी : कहां किया। अभी गणित का होम-वर्क करना बाक़ी है।

मम्मी : कब करोगे? मैं तो देख रही हूं, तुम लोग आपस में झगड़ा कर रहे हो।

[बच्चे चुप। एक-दूसरे को देखते हैं। फिर होम-वर्क करने लगते हैं।]

मम्मी : ज़रा अपना केल्कुलेटर देना। दुकानदार ने बिल भेजा है। हमेशा कुछ न कुछ गड़बड़ी कर देता है।

पिंकी : मम्मी! आप तो ज़ुबानी हिसाब कर लो। हमारा होम-वर्क पूरा नहीं हुआ तो क्लास में खड़ा होना पड़ेगा।

मम्मी : कौन माथा पच्ची करे। बरस बीत गए, दो और दो चार किए। जानती हो बचपन में मुझे चालीस तक पहाड़े याद थे।

पिंकी : ज़ुबानी! तब तो गुणा-भाग फटाफट कर लेती होंगी!

बबली : तभी पहले के ज़माने में केल्कुलेटर नहीं होते थे। मम्मी! ज़रा तेरह का पहाड़ा बोलो न .... मुझे गुणा करना है।

मम्मी : ***(बबली के हाथ से कॉपी लेकर)*** अरे इतनी सी बात ... तेरह एकम तेरह, तेरह दूनी छब्बीस, तेरह तिया उनचालीस, तेरह चौके ... तेरह चौके... तेरह चौके....।

पिंकी : मम्मी का केल्कुलेटर फेल।

बबली : सेल ख़त्म।

मम्मी : ***(गुस्से में)*** चुप! तेरह और चार को गुणा कर लो, तेरह चौके निकल आएगा।

बबली : आप ही गुणा करो- हमसे तो बिना केल्कुलेटर के गुणा नहीं होता।

मम्मी : कैसा ज़माना आ ग़या। कोई दिमाग़ से काम लेना नहीं चाहता। जानते हो मुझे....

बबली-पिंकी : पूरे चालीस तक पहाड़े याद थे।

सोनू-मोनू : पर तेरह का पहाड़ा भूल गईं।

मम्मी : चुप करो। लाओ केल्कुलेटर। मुझे हिसाब करना है। आज दुनिया में किसी पर विश्वास नहीं किया जा सकता।

[सभी बच्चे केल्कुलेटर ढूंढते हैं। पापा का प्रवेश।]

पापा : तुम यहां क्या कर रही हो? बच्चों को होम-वर्क करवा रही हो क्या?

मम्मी : अरे नहीं ... मैं तो इस बिल का हिसाब मिलाने आई थी। पिछले महीने भी पांच रुपए की गड़बड़ निकली थी।

पापा : क्या बच्चे इस बिल का हिसाब जोड़ेंगे?

मम्मी : उफ़! बिना केल्कुलेटर के हिसाब कैसे जोड़ा जा सकता है!

पापा : अरे अरे क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा। लाओ बिल अभी हिसाब लगाए देता हूं। आखिर गणित में एम.ए. किया है, कब काम आएगा।

सोनू-मोनू : बिल का हिसाब लगाने के लिए।

बबली : पिंकी केल्कुलेटर मिला क्या?

पिंकी : नहीं ... सुबह तो यहीं टेबिल पर रखा था।

बबली : बड़े भैया तो नहीं ले गए?

पिंकी : वो क्यों ले जाने लगे! उनके पास तो एक छोड़ दो-दो केल्कुलेटर हैं।

पापा : अरे बाबा, मैं इस बिल का हिसाब बिना केल्कुलेटर के लगा देता हूं। आख़िर एम.ए....

सभी बच्चे : गणित में किया है। किस काम आएगा।

[पापा बच्चों को आंख दिखाते हैं। बच्चे पढ़ने-लिखने लगते हैं। पिंकी केल्कुलेटर ढूंढती है।]

पापा : पिंकी बैठ जाओ। ***(पत्नी से)*** ज़रा वो बिल देना तो। हमारे ज़माने में चार-चार अंकों की जोड़ फटाफट लगा दिया करते थे।

[पिंकी अनमनी सी बैठ जाती है।]

सोनू-मोनू : चार-चार अंकों का जोड़।

पिंकी-बबली : फटाफट लगा दिया करते थे।

[पापा अंगुलियों पर हिसाब लगाते हैं।]

पापा : चार सौ ग्राम धनिया, दो सौ ग्राम मिर्ची, चार किलो पांच सौ ग्राम तेल, पच्चीस किलो गेहूं, पचास ग्राम ईलायची..... फिर भूल गईं.... मैंने कहा था बच्चों के लिए बादाम ले आना। परीक्षा सिर पर है। बादाम खाने से दिमाग़ तेज़ चलता है।

मम्मी : पहले बिल में लिखे सामान का हिसाब लगा लो.... फिर बादाम की बात करना।

पापा : पहले बादाम की बात ... हमारे ज़माने में सुबह-सुबह कसरत करते थे। फिर दूध में बादाम ओंटा कर पीते थे। तब कहीं जाकर दिमाग़ केल्कुलेटर की तरह काम करता था। आंखें अंकों पर दौड़तीं, और दिमाग़ फटाफट जोड़-बाकी करने लगता। दूसरे विषय के सवाल एक बार पढ़ते ही याद हो जाते थे।

[बच्चे आश्चर्य से पापा की ओर देखते हैं।]

मम्मी : अब बच्चों को पढ़ने दो। फटाफट दिमाग़ी केल्कुलेटर से बिल का हिसाब लगा लो।

पापा : चार सौ ग्राम धनिया... पंद्रह रुपए किलो। आधा किलो हुआ सात रुपए पचास पैसे का... चार सौ

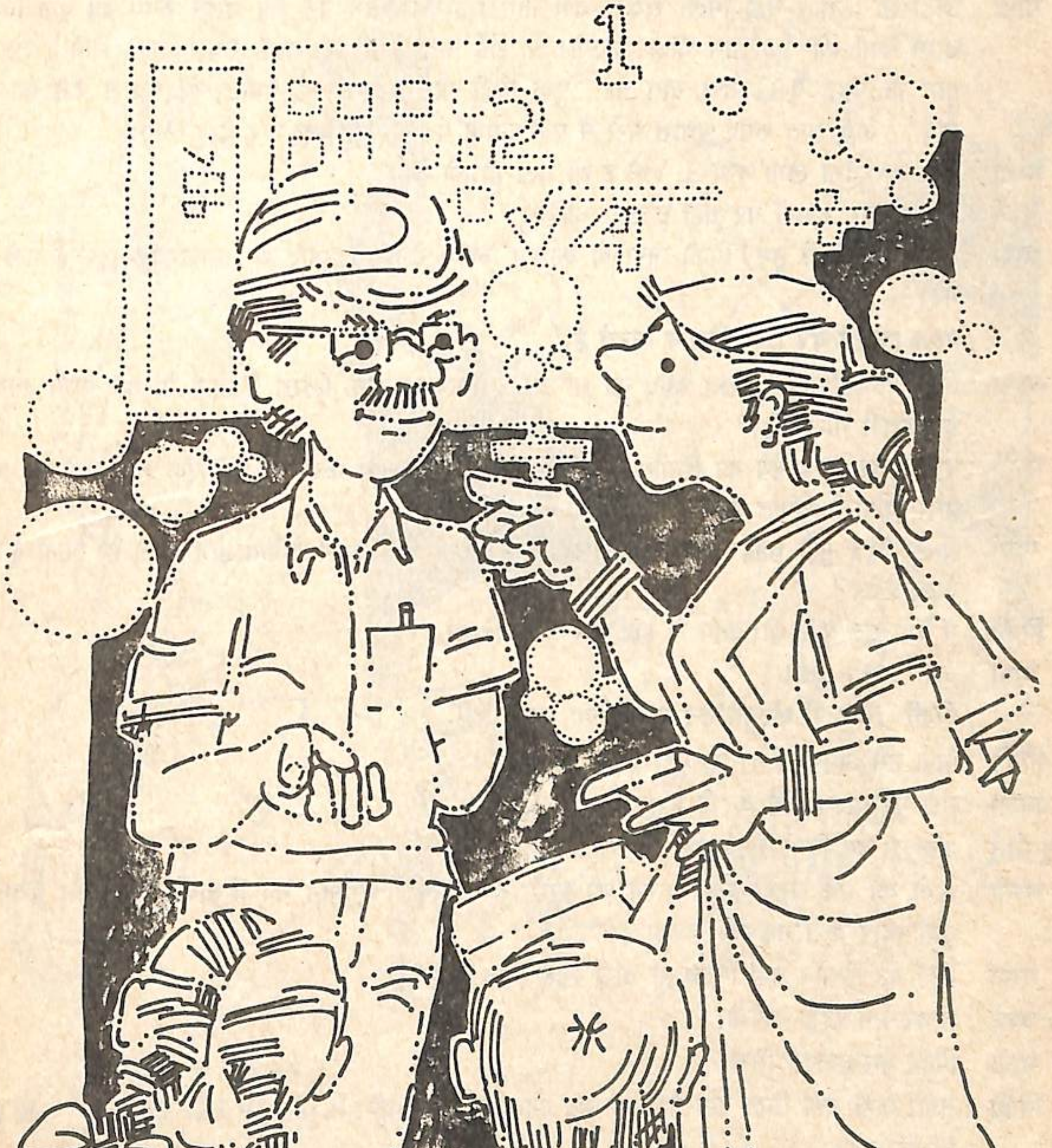

ग्राम का दाम.... पांच सौ ग्राम में से सौ ग्राम कम किए.... सात रुपए पचास पैसे में से दस ग्राम धनिये के पैसे कम करने हैं। *(मन ही मन हिसाब लगाते हैं।)*

मम्मी : मुई बादाम इतनी महंगी हो गई।

पापा : क्या कहा, बादाम महंगी हो गई।

मम्मी : अरे आप हिसाब मिलाइए।

बबली : बादाम महंगी हो गई... उफ़ अब हमारे दिमाग़ का क्या होगा?

पिंकी : दस ग्राम धनिये की क़ीमत क्या होगी?

पापा : छोटा-सा हिसाब नहीं मिला सकतीं-दस ग्राम धनिया जितने पैसे का उतने रुपए का एक किलो, उतने पैसों की एक ग्राम चीज़ आएगी। आ गई बात समझ में। पंद्रह रुपए किलो धनिया तो एक ग्राम के पंद्रह पैसे.. दस ग्राम के... एक बिंदी पीछे लगाओ.... एक रुपए पचास पैसे का दस ग्राम.... अब सात रुपए पचास पैसे में एक रुपया पचास पैसे घटा कर देख लेना।

मम्मी : घटा कर देख लेना क्या ... लगे हाथों घटा ही लो न!

बच्चे : अपना काम दूसरों पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पापा : *(पसीना पोंछते हुए)* पिंकी ज़रा वो काग़ज़ कलम देना तो। आए थे नमाज पढ़ने, रोज़े गले पड़ गए।

[पापा काफ़ी देर तक हिसाब करते हैं।]

पापा : मिल गया हिसाब ... छह रुपए का धनिया ... बिल्कुल ठीक लिखा है बिल में। अरे सभी लोगों में ईमानदारी मौजूद है।

मम्मी : दस मिनट में धनिये का हिसाब किया है- मिर्ची का हिसाब करने में पूरा एक घंटा लगेगा। एम.ए. पास किया है गणित में।

पापा : केल्कुलेटर मुझे चाहिए। केश बुक लिखनी है। कल आफ़िस में चैकिंग होने वाली है। पिंकी कहां है केल्कुलेटर?

पिंकी : में वही ढूंढ रही थी। आप ने डांट कर बिठा दिया।

पापा : ज़रा जल्दी ढूंढो।

[पिंकी फिर से केल्कुलेटर ढूंढने लग जाती है।]

पिंकी : पापा हमें अपना होम-वर्क पूरा करना है।

बबली : मुझे पूरी प्रश्नावली करनी है।

सोनू-मोनू : अंकल। हम बिना केल्कुलेटर के सवाल कैसे करेंगे?

मम्मी : सभी को एक साथ काम करने की सूझी है। पहले मैं सामान का हिसाब मिलाऊंगी। देखती हूं दुकानदार कैसे गड़बड़ी करता है।

पापा : कैश का हिसाब नहीं मिला तो चार्ज शीट मिल जाएगी।

सभी बच्चे : टीचर हमें खड़ा करेंगी।

पापा : पिंकी केल्कुलेटर मिला?

पिंकी : नहीं। कहीं नहीं मिल रहा है। एक-एक आलमारी देख ली। मैं तो थक गई, मुझसे नहीं ढूंढा जाता केल्कुलेटर।

मम्मी : बिना केल्कुलेटर के हिसाब कैसे मिलाऊंगी?

पापा : कैश बुक कैसे लिखूंगा?

सभी बच्चे : हमारा होम-वर्क कैसे होगा?

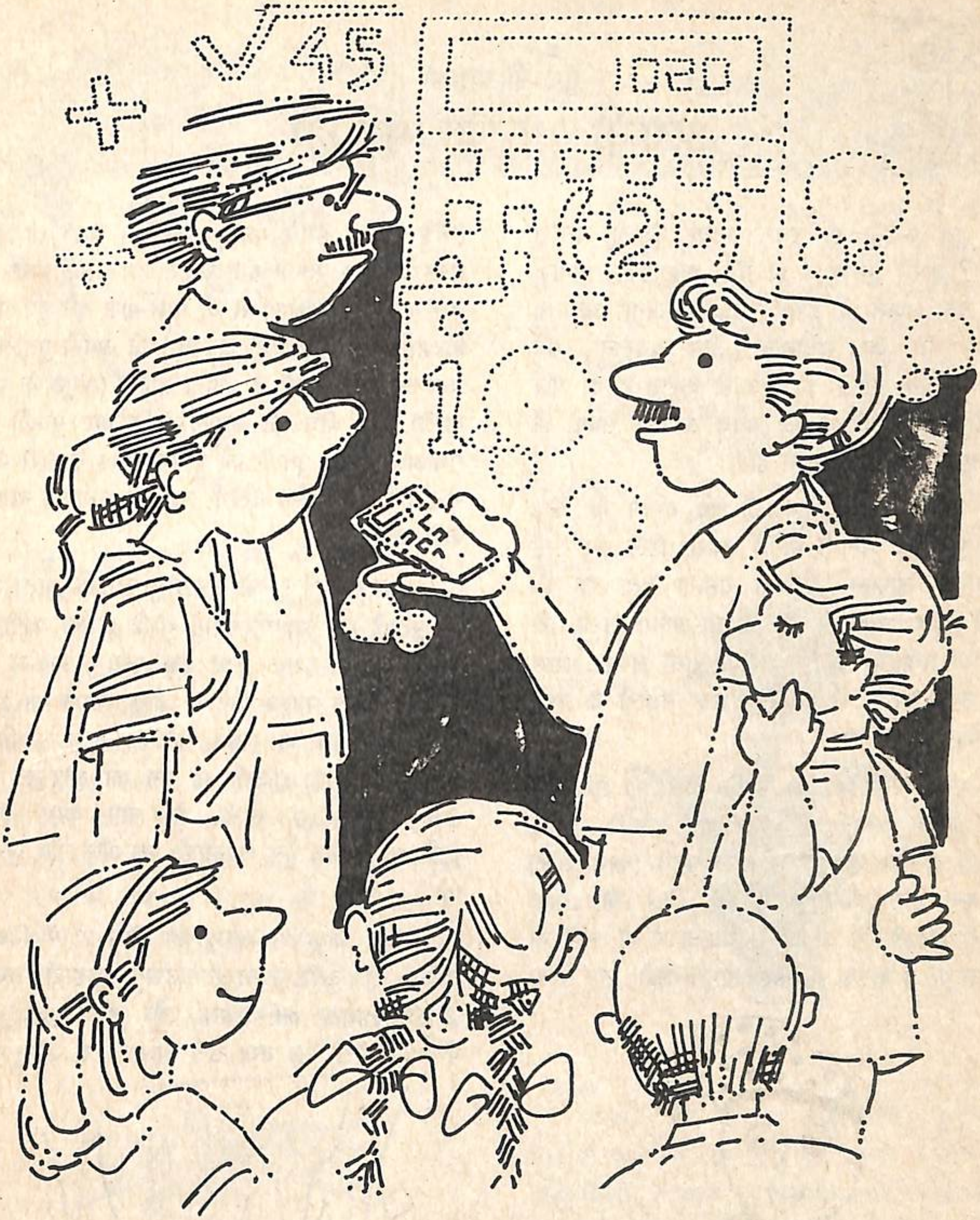

[बड़े भैया का प्रवेश।]

बड़े भैया : अरे तुम लोग मुंह लटकाए क्यों बैठे हो?

सब : केल्कुलेटर!

बड़े भैया : केल्कुलेटर ... मैं ले गया था। आज मेरा केल्कुलेटर ख़राब हो गया था। ये लो।

[बड़े भैया जेब में से केल्कुलेटर निकालते हैं। सभी पहले मैं, पहले मैं कहते बड़े भैया पर झपटते हैं]

❑ योगेंद्र दवे

॥ तुम भी बनाओ ॥

अपनी नाटक मंडली

क्या तुम अपनी ही एक नाटक मंडली बनाना चाहोगे? इसमें तुम ख़ुद ही मंच, कलाकार, पोषाक आदि बना सकते हो। इसमें नाटक लिखना, अभिनय करना, मंच का संचालन, सीन बदलना, पर्दे उठाना-गिराना वग़ैरह भी ख़ुद ही करना होगा। और यह सब तुम पुतलियों की मदद से कर सकते हो और ख़ूब मज़ा लूट सकते हो।

पर इस नाटक मंडली को बनाने के लिए पहले पुतलियां बनानी होंगी। सबसे पहले हम तुम्हें दो सबसे आसान पुतलियां बनाना बता रहे हैं। अगले कुछ अंकों में भी अलग-अलग तरह की पुतलियां बनाएंगे। जो भी तरीक़ा तुम्हें सबसे अच्छा लगे उसी तरीक़े से अपनी नाटक मंडली के सारे कलाकार बना लेना।

एक तरीक़ा तो यह है कि जिस भी तरह की तुम्हें पुतली बनानी हो (लड़का, लड़की, कुत्ता, बिल्ली) उसका एक चित्र पतले पुट्ठे (कार्ड शीट) पर बना लो। ध्यान रखना कि चित्र की लंबाई तुम्हारी हथेली की लंबाई से ज़्यादा न हो, नहीं तो उसे संतुलित करना मुश्किल होगा। देखो, एक चित्र, (चित्र-1) तो हमने यहां बताया है। चाहो तो इसी तरह की एक पुतली बना सकते हो। इसके शरीर में तुम्हें टूटी हुई रेखाओं से दो पास-पास बने हुए गोले दिखाई देंगे। ऐसे ही दो छेद तुम भी अपनी पुतली में बना लो। फिर इनमें से अपनी तर्जनी (अंगूठे के पास वाली) और बीच की उंगलियां पिरोकर पुतली को नचाओ। देखना पुतली की रंगीन सतह तुम्हारी ओर न हो। वो तो दर्शक देखेंगे, न। अब नचाकर बताओ कैसे नाचता है?

यह तो हुई सबसे सरल पुतली की बात। अब जो पुतली हम बनाएंगे उसमें थोड़ी ज़्यादा कारीगरी करनी पड़ेगी। इसके लिए एक मध्यम आकार का आलू, नुकीला पतला धारदार चाकू, काला या अन्य कोई गाढ़े रंग का ऊन, बटन, कार्क, सीपियां, आलपिन, कपड़ा (किसी भी रंग का और लगभग 25 सें.मी.×30 सें.मी. के नाप का), कैंची, सुई-धागा, स्केच पेन या स्याही पेन और गोंद जुगाड़ लो।

अब चाकू से आलू को चित्र-2 में दिखाए तरीक़े से कुरेद-कुरेदकर उसमें तुम्हारी तर्जनी उंगली लायक़ जगह बना लो। उंगली आलू में फंसाकर देखो कि क्या उसे आसानी से आजू-बाजू

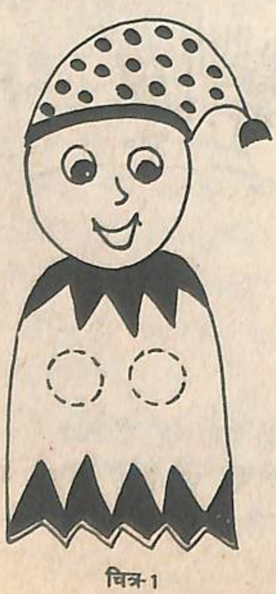

चित्र-1

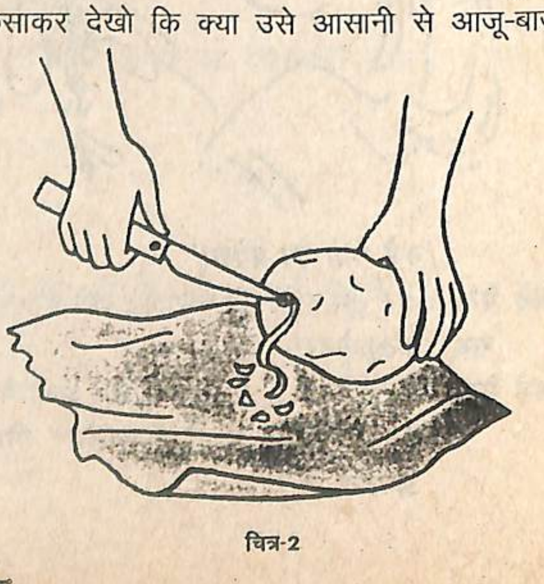

चित्र-2

चित्र-3

हिला, घुमा, झुका आदि सकते हो। इस आलू पर पुतली का चेहरा बनाना है। आंखों के लिए दो एक-से बड़े-बड़े गाढ़े रंग के बटन आलपिन की मदद से चिपका दो। नाक के लिए कार्क भी आलपिन से ही चिपकाओ। कान की जगहों पर आलू में ही कट लगाकर दो सीपियां फंसा दो। भौहों और होठों के लिए चित्र-3 के अनुसार पिन लगा सकते हो या फिर स्केच पेन या स्याही के पेन से लकीर खींच लो। अब सिर में कसर बची बालों की। इसके लिए ऊन को सिर पर चिपका लो। तुम चाहो तो बीच की मांग भी निकाल सकते हो या किनारे की। कुछ बाल माथे पर लटों की तरह ज़रूर बिखेर देना ताकि आलू की गोलाई छिप जाए। बालों को

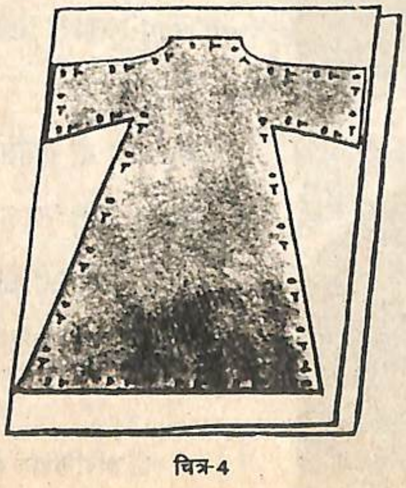

चित्र-4

चिपकाने के बाद उन्हें छूटे हुए सिरे से काटकर बराबर कर दो। पुतली का सिर तैयार है।

अब इसे धड़ और कपड़ों की ज़रूरत है। धड़ का काम तो तुम्हारी हथेली ही करेगी इसलिए सिर्फ़ कपड़ों का जुगाड़ करना होगा। 25 सें.मी.×30 सें.मी. वाले कपड़े को लंबाई में बीच से मोड़कर दोहरा कर लो। अब इस दोहरे कपड़े पर चित्र-4 में दिखाई गई कमीज़ जैसी आकृति बना लो। फिर चित्र के अनुसार सफ़ेद हिस्सा काटकर अलग कर दो। तुम्हें कमीज़ के आकार के दो टुकड़े मिलेंगे।

दोनों को एक के ऊपर एक रखकर नीचे की किनोर और गर्दन वाली जगह को छोड़कर बाक़ी आजू-बाजू से सिल दो। सिलाई हो जाए तो इसे उल्टा कर लो ताकि सिले हुए सिरे अंदर की तरफ हो जाएं।

चित्र-5

आओ, अब पहनकर देखें। कमीज़ के निचले सिरे में अपनी हथेली घुसाओ। तर्जनी उंगली गर्दन वाले हिस्से से बाहर आ जाएगी। उस पर आलू को फंसा दो। अंगूठा और बीच की उंगली, दोनों को कमीज़ की आस्तीनों में घुसाओ। हो गई पुतली तैयार। अपनी दोनों उंगलियां, अंगूठे और कलाई को घमा-फिराकर पुतली को नचाओ।

हां, नचाने के लिए तुम्हें अभ्यास करना पड़ेगा।

अगले अंक में हम काग़ज़ की पट्टियों को पानी में भिगोकर पुतलियां बनाएंगे।

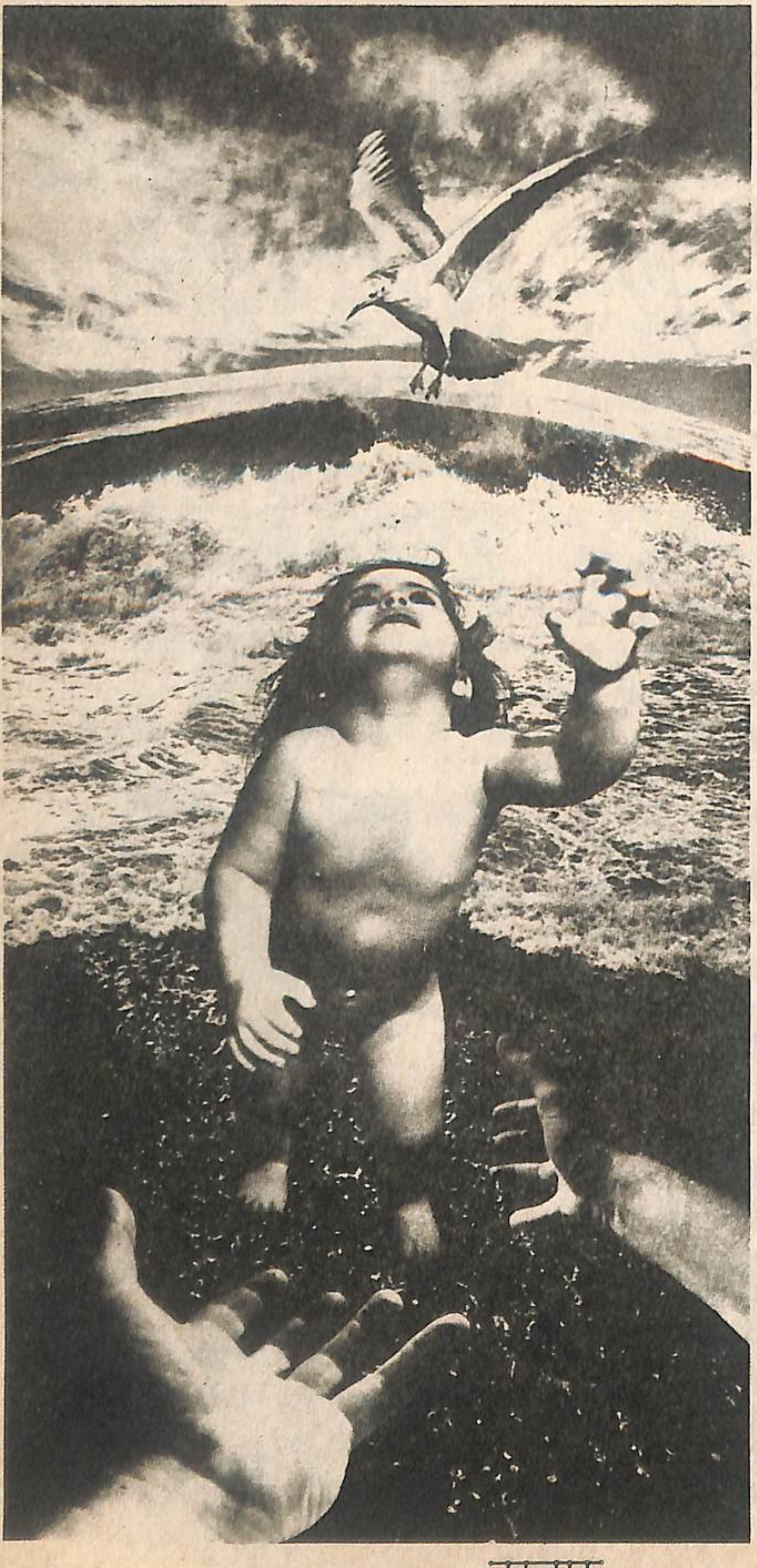

जिज्ञासा

नन्हे मन में जिज्ञासा उठी तो
लालसा हुई उत्तर पाने की!
दौड़कर पहुंचा रसोईघर में
मम्मी से कहा बूझाने की!!

पापा से पूछो, मम्मी बोली
काम करना मुझको सारे!
रसोई बनाकर झाड़ू देना
बिस्तर लगाना, बाद तुम्हारे!!

ऑफ़िस से आकर पापा
लेटे पलंग पर आंखें मींचे!
थककर चूर हुआ आज-
बहना से पूछो जाकर नीचे!!

बहना कहे मुझे पढ़ने दो
फालतू बातों का वक़्त नहीं!
दूसरों को परेशान करना
बस काम तुम्हारा यही!!

जिससे पूछो वो कहता
जाओ, सर मत खाओ!
जिज्ञासा कैसे शांत हो मेरी
तुम्हीं मुझे अब बतलाओ!!

❑ हरिकिशन माली

यात्रा-कथा

पुरी की यात्रा

'**भा**रती, भारती उठो। आज पुरी जाना है।'

'ऊं हूं सोने दो।'

'ठीक है हम जा रहे हैं पुरी।'

'अच्छा उठती हूं!' जैसे ही मैं उठकर बैठी मेरे मन में सारे सपने फिर से सजीव हो उठे। मैंने पहले कभी समुद्र नहीं देखा था। जाने कैसा होगा समुद्र! कैसे होंगे जगन्नाथ और अन्य मंदिर। पुरी के बारे में नाना कल्पनाएं मन में दौड़ने लगीं।

मेरे पापा एक लेखक हैं। उनके लेखक होने के कारण हमें कई बार बाहर जाने का मौक़ा मिलता है। परंतु अभी तक हम ज़्यादातर दिल्ली के पास के स्थानों जैसे ऋषिकेश, हरिद्वार, देहरादून, आगरा मसूरी आदि ही जाते रहे हैं। बहुत दिनों बाद इतने लंबे सफ़र पर जा रहे हैं।

'भारती..!' इस आवाज़ ने मुझे कल्पनाओं की दुनिया से ज़मीन पर उतार दिया। मैं उठकर नहाने चली गई। नहाकर आई तो देखा, कि मम्मी रात को बांधे गए सामान को बाहर निकालकर इकट्ठा कर रही हैं और पापा स्कूटर-रिक्शा लाने, जाने के लिए तैयार हो रहे हैं। चाय तैयार थी। चाय पीते-पीते पापा अचानक बोल पड़े, 'किसी ने गुड्डू पापा (पापा के बड़े भाई) को बताया?' किसी ने कुछ नहीं कहा। गुड्डू पापा हमारी ही बिल्डिंग में ऊपर रहते हैं। पापा ने घर में ताला लगाया, फिर मैं और पापा दोनों ऊपर उनके घर की ओर चल पड़े। मेरे हाथ में गुड़िया और पापा के हाथ में चाबी थी। चाबी और गुड़िया हम उनकी देख-रेख में छोड़ रहे थे। उनके घर में सभी सो रहे थे। बस गुड्डू पापा ने जागकर दरवाज़ा खोला और वे दोनों चीज़ें सुरक्षित स्थान में रखकर हमारे साथ नीचे आ गए। फिर पापा स्कूटर-रिक्शा लेने गए। स्कूटर-रिक्शा में बैठकर हम तीनों (मैं, मम्मी, पापा) स्टेशन आ गए।

स्टेशन जगमगा रहा था। वहां बहुत भीड़ थी। हमने एक कुली की सहायता से सामान गाड़ी में चढ़ाया और गाड़ी के अंदर बैठ गए। लगभग आधे घंटे बाद गाड़ी चल पड़ी। बाहर के दृश्यों में दिल्ली होने के कारण मेरी कोई रुचि नहीं थी। मैंने अपने आसपास के लोगों का मुआयना किया और पत्रिका निकालकर पढ़ने लगी।

पता ही नहीं चला कि कब दोपहर हो गई। फिर मैं खाना खाकर सो गई। शाम को उठी तो बाहर के दृश्य बहुत सुहावने थे। मैं वही देखने लगी। हमने चाय पीकर अपने सामने वाले सज्जन से कुछ बातें की। वे भुवनेश्वर के रहने वाले थे। उन्होंने हमें पुरी के बारे में बहुत कुछ बताया। धीरे-धीरे रात हो गई। गाड़ी अपने निश्चित समय से चल रही थी। खाना खाकर हम सब सो गए। अगले दिन दोपहर होने तक पुरी स्टेशन आ गया। गाड़ी में से उड़ीसा के सुंदर दृश्य देखकर मेरी पुरी देखने की इच्छा और बढ़ गई थी।

स्टेशन पर मेरे अंकल आए थे, उनके साथ हम होटल में चले गए। होटल से समुद्र दिखता था। मैं समुद्र देखने भाग गई। मुझे लगा जैसे मैं स्वर्ग में पहुंच गई हूं। समुद्र की लहरें ऊंची उठकर, झाग की तरह आगे आती थीं, फिर पीछे चली जाती थीं। समुद्र का कोई अंत नहीं था। समुद्र किनारे कई लोग नहा रहे थे। मैं कुछ देर तक मम्मी-पापा के साथ लहरों में खड़ी रही। फिर हम लोगों ने कुछ सीपियां इकट्ठी कीं और दो-तीन डाब (पानी वाला हरा नारियल) पीकर वापस होटल की ओर चल पड़े। अगले दिन हमने यात्रा की थकान उतारी। फिर शाम के समय हम कई घंटे समुद्र के किनारे बैठे रहे। सूरज अस्त होने के दृश्य का हमने पूरा मज़ा लिया।

अगले दिन सुबह-सुबह सूर्य की किरणें जब सागर से छनकर ज़मीन पर पड़ीं तो हमने उनका स्वागत किया और घंटों समुद्र के किनारे बैठे रहे। फिर हम टूरिस्ट बस में बैठकर दर्शनीय स्थानों की सैर करने निकल पड़े। जगन्नाथ मंदिर, लिंगराज, धवलगिरि, कोणार्क मंदिर आदि अनेक भव्य मंदिर देखकर शाम को वापस होटल पहुंचे। होटल पहुंचने के बाद पापा ने बताया कि कल हम मछुआरों की एक बस्ती में जाएंगे।

सुबह उठकर हम बस्ती में जाने के लिए तैयार हो गए। वहां के कुछ लोगों से पता चला कि इन भव्य मंदिरों, इन ऊंचे-नीचे आलीशान होटलों के पीछे छिपी है मछुआरों की दर्द भरी दास्तां। यह सुनकर मन बहुत दुखी हुआ और बस्ती देखने की इच्छा और बढ़ गई। धीरे-धीरे हम बस्ती तक आ पहुंचे। बस्ती में, इतनी गंदगी थी कि आगे बढ़ा नहीं जा रहा था। कुछ बच्चे बिना कपड़ों के इधर-उधर

घूम रहे थे। पुरी के होटलों में ज़रा-सी कहीं कोई टूट-फूट हो तो सरकार, न जाने कितने आदमी, इनकी मरम्मत के लिए भेज देती है। पर इन होटलों के पीछे छिपी गरीब बस्ती के मछुआरों, कारीगरों पर कोई ध्यान नहीं देती। ये मछुआरे जान पर खेलकर स्वादिष्ट मछलियां पकड़ते हैं, जिन्हें होटलों में रहने वाले टूरिस्ट मज़े से खाते हैं। कारीगर, दस्तकार सीपियों आदि से सुंदर चीज़ें बनाते हैं, जिन्हें टूरिस्ट ख़रीदते हैं। लेकिन इन्हें बनाने वालों की अपनी ज़िंदगी की मरम्मत अभी तक नहीं हुई है। इस बस्ती में लगभग बारह सौ परिवार रहते हैं । पानी के लिए केवल दो नल हैं, उसमें से भी एक टूटा है। बच्चों की शिक्षा के लिए स्कूल तो हैं, पर इनमें न के बराबर शिक्षा दी जाती है। यहां रहने वाले मछुआरों के कई बार जाल काट दिए जाते हैं। उन्हें मज़दूरी भी पूरी नहीं मिलती। एक परिवार की एक दिन की आमदनी केवल पांच से सात रुपए है।

इन सब परेशानियों के अलावा सरकार उन्हें कई बार वहां से हटाने की धमकी दे चुकी है, ताकि टूरिस्ट लोग केवल वहां की सुंदरता को ही निहारें। मैं सोचती हूं कि क्या दिन भर के काम से थके मछुआरों और दस्तकारों को पीने के लिए ठीक से पानी भी उपलब्ध नहीं होगा? क्या दिन भर मछलियां सुखाने के बाद थकी औरतों को मज़दूरी के रूप में केवल पांच-पांच रुपए ही मिलेंगे? क्या इनके अशिक्षित बच्चे कभी साक्षर हो पाएंगे? यहां के लोगों की आंखों में आशा की एक किरण अभी भी है। क्या यह आशा, निराशा बनकर रह जाएगी?

❑ **रेशमा भारती, तेरह वर्ष, दिल्ली**

सभी चित्र : शोभा घारे

माथापच्ची हल : मार्च, 93 के

1. चौथी संख्या है- 411275.
2. नौ सिक्कों में तीन अठन्नियां और छह चवन्नियां होंगी।
3. टंकी ख़ाली होने में 15 मिनट लगेंगे।
4. अजायबलाल ने हर थाली में 27-27 रोटियां रखी थीं।
6. दुकानदार की तराजू में गड़बड़ थी। तराजू में जहां कांटा था, उसके आजू-बाजू यानी बाईं और दाईं भुजाओं की लंबाई बराबर नहीं थी। ऐसी तराजू में यदि लंबी भुजा वाले पलड़े पर सामान तौला जाए तो वह दूसरे पलड़े पर रखे वज़न के बराबर नहीं होगा।

वर्ग पहेली 22 का हल

1 बा	त	2 ची	3 त		4 प	5 ट	वा	6 री
र		7 न	व	पु	व	क		छ
8 बा	9 ग		ना		न		10 ता	रा
11 र	ह	म		12 भू		13 उ	प	ज
	य		14 मै		15 जी		मा	
16 ब	छ	ना		17 दो		18 मा	प	19 ना
20 त	ना		21 जे		22 बा		23 क	म
र		24 फ	स	ल	रू	25 प		घा
26 स	श	री	र		27 द	स्त	का	री

वर्ग पहेली 22 के सर्वशुद्ध हल भेजने वाले पाठक हैं-संदीप कुमार वर्मा, गुड़गांव, **हरियाणा**। मुकेश कुमार, मझौली, पटना, **बिहार**। भारती साहू, अरविंद पुरोहित, (इंदागांव), रायपुर। आर. के. पुरी, (मनेंद्रगढ़) सरगुजा। लक्ष्मणसिंह क्षत्री (गनियारी), बिलासपुर, **मध्यप्रदेश**। हिमांशु (डाक पत्थर) देहरादून, **उत्तरप्रदेश**। **इन्हें तीन माह तक चकमक उपहार में भेजी जाएगी।**

खेल कागज़ का

डिब्बा

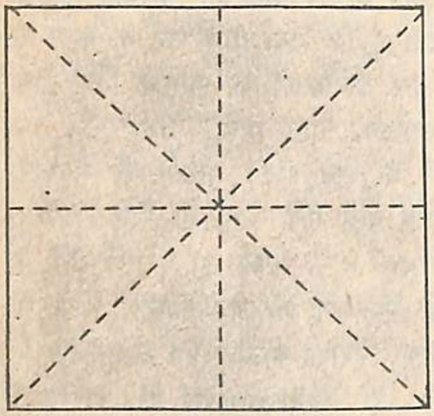

1. एक वर्गाकार कागज़ लो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से एक-एक करके सारे मोड़ बना लो।

2. कागज़ को बीच से दोहरा कर लो।

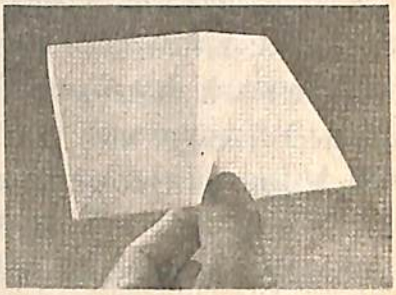

3. चित्र में दिखाए तरीक़े से कागज़ को पकड़ो और दोहरे किए हिस्से में से दाएं हिस्से को खोलो।

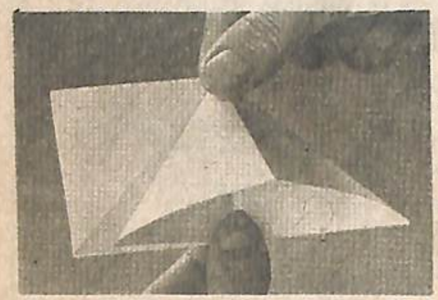

4. कागज़ को नीचे रखकर खोले हुए हिस्से को दबाकर समतल कर लो।

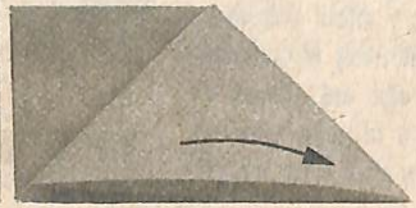

5. ऐसी आकृति मिलेगी। समतल किए हिस्से में बने त्रिभुज के बाएं हिस्से को त्रिभुज के बीच से तीर की दिशा में मोड़ते हुए दाईं ओर लाओ।

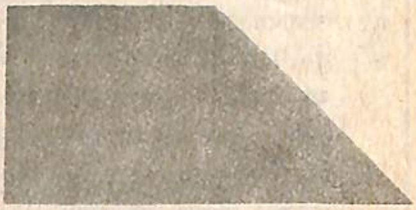

6. ऐसी आकृति मिलेगी। अब आकृति के बाएं हिस्से पर भी चित्र **3** से **5** तक की क्रिया दोहराओ।

7. ऐसी आकृति मिलेगी। इसका नुकीला सिरा नीचे कर लो।

8. इस तरह। (यहां से आगे की आकृतियां तुम अलग डिज़ाइन के कागज़ पर देखोगे।) आकृति में कागज़ की ऊपरी सतह चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ो।

9. ऐसे। अब फिर टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ते हुए उस सिरे को वापस लाओ।

10. अब ऊपर निकल रहे सिरे को टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में अंदर की तरफ ऐसे मोड़ो कि ...

11. त्रिभुज, आकृति की ऊपरी सतह को अंदर दबा ले।

12. अब चित्र 8 से 11 तक की क्रिया दाएं सिरे पर भी दोहराओ।

13. ऊपरी सतह के दोनों ओर के सिरों को मोड़ने के बाद ऐसी आकृति मिलेगी। अब आकृति को पलट लो और दूसरी तरफ के दोनों सिरों को भी चित्र 8 से 11 तक की क्रिया दोहराकर मोड़ लो।

14. तुम्हारे पास अब ऐसी आकृति है। टूटी हुई रेखा पर से मोड़कर निशान पक्का कर लो।

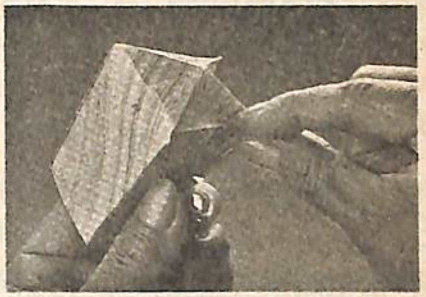

15. चित्र में दिखाए तरीक़े से मोड़ खोलकर चपटा करके तला बना लो।

16. एक ऐसा डिब्बा तैयार हो गया जिसमें तुम पेन पेंसिल भी रख सकते हो और चाहो तो फूल भी।

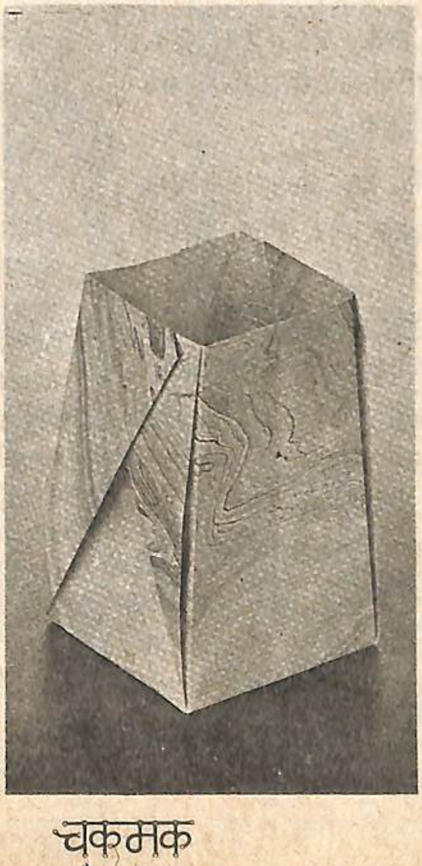

अब तक तुम काग़ज़ की कई तरह की चीज़ें, खेल आदि बना चुके हो। वे तुम्हें कैसे लगे? क्या दिक़्क़त आई? हमें लिखो। सं.

क्यों.... क्यों..: समापन

क्यों... क्यों.. कालम जनवरी, 93 अंक से समाप्त कर दिया है। लेकिन जनवरी से पहले जो सवाल पूछे गए थे, उनमें से कुछ के जवाब बाक़ी हैं। इन पर हम यहां चर्चा कर रहे हैं।

पूछे गए सवाल थे-

1. क्या उंगली दिखाने से पेड़ में लगे फल सड़ जाते हैं?
2. क्या दिन में कहानी सुनाने से मामा रास्ता भूल जाते हैं? क्या नाव में मामा-भानजे एक साथ बैठें तो नाव डूब जाती है?
3. क्या ख़ाली झूला झुलाने से बच्चे का पेट दुखता है? क्या छोटे बच्चे को गुदगुदी करके यां वैसे ही बहुत अधिक हंसाने पर, बच्चे बाद में उतना ही अधिक रोते हैं?
4. किसी ख़ास दिन कोई ख़ास काम करने की मनाही क्यों होती है?
5. क्या जुंएं पसीने से पैदा होते हैं?

ये सवाल क्यों.... क्यों.. 22, 23, 24, 25 एवं 26 में पूछे गए थे। पाठकों ने उनके जवाब या इन पर अपने मत हमें भेजे हैं।

अब तक तुमने भी यह आज़माकर देख लिया होगा कि पेड़ में लगे फल और उंगली दिखाने में कोई संबंध नहीं है।

'दिन में कहानी सुनाने पर मामा रास्ता भूल जाते हैं।' यह धारणा किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा फैलाई लगती है, जिसके बच्चे कहानी सुनने के बड़े शौक़ीन रहे होंगे और हर कभी कहानी सुनाने की मांग कर बैठते होंगे। वास्तव में ऐसा कुछ नहीं होता है। यह तुम भी समझते हो। इस सवाल के साथ जुड़ा दूसरा सवाल भी कुछ ऐसा ही लगता है। हो सकता है किसी नाव वाले की किन्हीं मामा-भानजे से पटती न हो और वह उन्हें नाव में बिठाना नहीं चाहता हो, सो उसने कह दिया होगा कि तुम्हें बिठाऊंगा तो मेरी नाव डूब जाएगी। वरना मामा-भानजे हों या चाचा-भतीजे, नाव के डूबने न डूबने से उनका कोई संबंध नहीं।

ख़ाली झूला झुलाने और बच्चे के पेट दुखने में दूर-दूर तक संबंध नहीं है। हां, जहां तक बच्चों को गुदगुदी करके या वैसे ही बहुत अधिक हंसाने पर बच्चे के रोने की बात है, तो यह संभव लगता है। जब हम ही अगर लगातार हंसते रहें-चुटकुले सुनकर या कोई हंसी मज़ाक वाली फिल्म देखकर, तो कहते हैं हंसते-हंसते पेट में बल पड़ गए। या पेट में दर्द भी होने लगता है, आंखों से आंसू आ जाते हैं। कभी-कभी ऐसा भी महसूस होता है, जैसे सांस रुक रही हो। तो छोटे बच्चों के साथ तो यह हो ही सकता है।

किसी ख़ास दिन कोई ख़ास काम करना या नहीं करना तो अपनी-अपनी श्रद्धा की बात है। इसके पीछे तथ्य नहीं है। यह ठीक वैसा ही है जैसे आमतौर पर सभी दफ़्तरों, स्कूलों आदि में इतवार की छुट्टी होती है।

जुंएं कैसे पैदा होते हैं, यह बताने का काम हमने सवालीराम को सौंपा है। इसी अंक में पढ़ो, वे क्या कहते हैं!

जिन पाठकों ने जवाब भेजे, उनके नाम हैं-

चंद्रभूषण श्रीवास्तव, कट्ठीवाड़ा, **झाबुआ**। अपर्णा कनोडिया, पदमसिंह धाकड़, **ग्वालियर**। पवन गुप्ता, (कांटाफोड़), विजय जायसवाल, धर्मेंद्र जायसवाल, महेश कुमार अंडेरिया, निलाभ तिवारी, राजकिशोर जायसवाल (हाटपीपल्या), अनिल शर्मा, (रनायलकलां), टीकमचंद्र पाटीदार (देहरिया साहू), प्रवीण झा, **देवास**। गोरेलाल वर्मा, **सरगुजा**। द्वारिकाप्रसाद यदु, (भाटापारा) **दुर्ग**। किशोर मिश्रा (केराडीह), नरेंद्र सिंह (पतरापाली) **रायगढ़**। उमेश कुमार (घूलेट), मृणालिनी कंचन, **धार**। आशीष दलाल, देवेंद्र शर्मा, सीमा गोराडिया, शैलेष गर्ग (पानसेमल), **खरगोन**। कुबेर शरण द्विवेदी (छपड़ौर), मुकेश कुशवाहा (करकटी), **शहडोल**। सुरेशचंद्र रावत (लहर्रा), **मुरैना**। सत्येंद्र सिंह रघुवंशी, आलोक गुहा, **हरदा**। शरद डडसेना (लोरमी), **बिलासपुर**। शालिकराम नेमा (गढ़ी बैहर), **बालाघाट**। मनोज कुमार राजवेंहा, (टिमरनी) **होशंगाबाद**। अभिषेक खरे (मड़देवरा) **छतरपुर**। **सभी मध्यप्रदेश**।

(शेष पृष्ठ 29 पर)

अंजोर
साहू
दीदी, कोई कहानी सुनाओ।
दिन में कहानी सुनाऊँ। नहीं मैं ऐसा नहीं कर सकती।
क्यों?
तुम्हें पता नहीं दिन में कहानी सुनाने से मामा रास्ता भूल जाते हैं।
मुझे इसमें विश्वास नहीं। ठीक है, कहानी सुनाओ देख लूंगा कि मामा रास्ता भूलते हैं या नहीं।
ठीक है, बाबा तो सुनो कहानी एक गांव में एक किसान अपनी पत्नि के साथ.... .....
कहानी खत्म होने के बाद किसी ने दरवाजा खटखटाया दरवाजा खुला..
अरे!! मामाजी आए...
अचानक...
भैया, बड़े दिनों बाद आए हो... कैसे रास्ता भूल गए?
मामा जी नहीं, मां! यह दीदी बताएगी कि मामाजी कैसे रास्ता भूल गए?

महुआ

महुआ अपने फूलों के कारण जाना जाता है। यह पेड़ मध्य भारत की पहाड़ी जगहों पर ज़्यादा होता है, जहां गर्मी पड़ती है और वर्षा भी अच्छी होती है। यह पेड़ 60 से 100 फीट तक ऊंचा होता है और बहुत आसानी से बीजों से उगाया जा सकता है। आमतौर पर बीजों से उगाए छोटे पौधे को कहीं और लेजाकर लगाने से उस पौधे को बड़े होने में थोड़ी मुश्किल होती है। लेकिन यही पौधा थोड़ा और बड़ा और मज़बूत हो जाए तब इसे ले जाकर कहीं और लगाना आसान होता है।

पतझड़ में महुए के पेड़ से पत्ते गिरना शुरू हो जाते हैं। इसके पत्ते मोटे, चिकने, चमड़े जैसे होते हैं। टहनी के आख़िरी सिरों पर पत्ते गुच्छों में होते हैं। नए पत्ते लाल-तांबई रंग के होते हैं। नए पत्ते आने के बाद पेड़ बहुत ही सुंदर दिखाई देता है। बसंत ऋतु के साथ-साथ पीले-पीले फूल निकल आते हैं। जुड़ी हुई आठ-नौ पंखुड़ियों वाला यह फूल आकार में प्याले जैसा होता है। जब लगभग सारे पत्ते गिर जाते हैं तब पेड़ फूलों से भर जाता है। ये फूल रात में खिलते हैं और सुबह होने से पहले गिर जाते हैं। फूलों में से मीठी, नशीली-सी सुगंध आती है। गूदेदार फूलों में रस भरा होता है। अक्सर पक्षियों को फूल खाते देखा जा सकता है। गांवों और जंगलों में तो जंगली पशु (भालू, सियार आदि) भी इन्हें खाने चले आते हैं।

फूल आने के बाद फरवरी-मार्च के आसपास नए-नए पत्ते फिर से आने लगते हैं। इसके लगभग दो महीने बाद फल पकने लगता है। फल हरे रंग का होता है। महुए के फल को गुल्ली कहते हैं।

महुए की टहनियों और छोटी डालों से एक प्रकार का लसीला पदार्थ निकलता है जो गठिया रोग में काम आता है। इसी तरह इसके फूल, फल भी कई प्रकार के रोगों में काम आता है। फूलों का उपयोग खाने में भी किया जाता है। इसका गूदा खाने में स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है। फूलों को सुखाकर रखते हैं और साल भर खाते हैं। जब फूलों के गिरने का समय होता है तब पेड़ के नीचे सफ़ाई करके कपड़ा बिछा दिया जाता है सुबह कपड़े पर गिरे फूल बीन लिए जाते हैं। इन फूलों से एक प्रकार की शराब भी बनाई जाती है।

महुए के पेड़ का हर हिस्सा किसी न किसी काम आता है। इसके फूल और फल की ज़रूरत को देखते हुए इसे काटा नहीं जाता फिर भी इसकी लकड़ी मकानों में बल्ली लगाने के काम आती है। बीजों से गाढ़ा पीला तेल निकाला जाता है। इस तेल को साबुन बनाने, दिए में जलाने के काम में भी लाया जाता है। अंग्रेजी में इस पेड़ को **'बटर ट्री'** कहा जाता है। ❑❑

खेल पहेली

यह आकृति सात टुकड़ों (पांच त्रिभुज, एक आयत और एक वर्ग) से मिलकर बनी है। यहां दी गई अन्य आकृतियां भी इन्हीं टुकड़ों से मिलकर बनी हैं। हर आकृति में सातों टुकड़ों का उपयोग हुआ है।

ये सात टुकड़े गत्ते से बनाए जा सकते हैं। एक मोटा गत्ता लो! उस पर एक बड़ा वर्ग बनाओ। वर्ग को 16 बराबर हिस्सों में बांट दो! हर हिस्सा भी एक वर्ग होगा। अब वर्ग पर चित्र में दिखाए अनुसार रेखाएं खींच लो। इन रेखाओं पर से गत्ते को टुकड़ों में काट लो। टुकड़ों पर रंगीन काग़ज़ चिपकाकर सुंदर बना सकते हो। बस इन्हीं टुकड़ों को आपस में मिलाकर रखने पर आकृतियां बनेंगी। तुम भी बना देखो (हल अगले अंक में)।

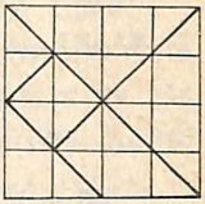

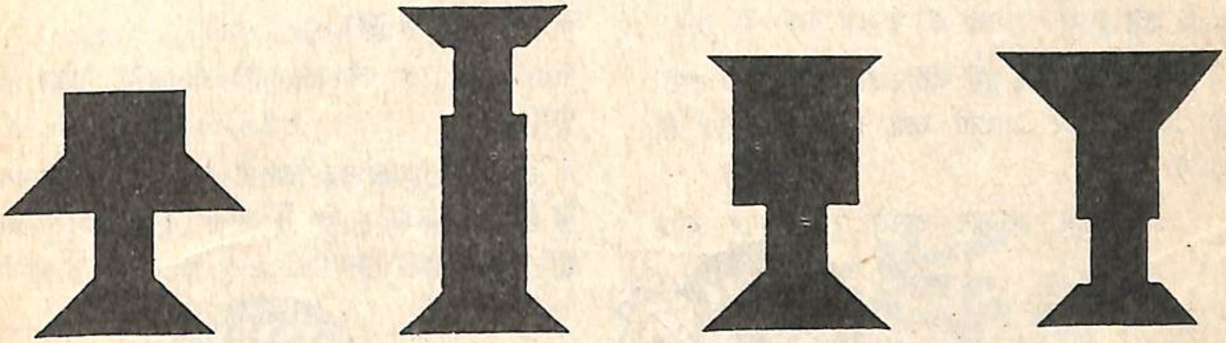

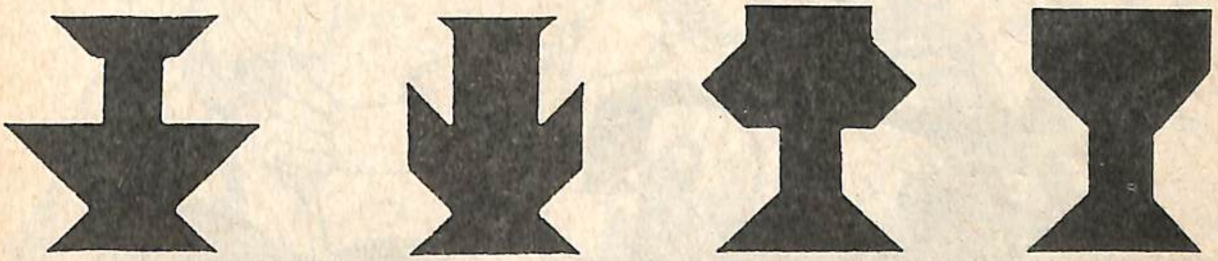

हल मार्च, 93 अंक के

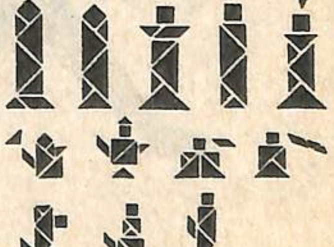

एक लोककथा

कामचोर

पुराने ज़माने की बात है कि कहीं एक आदमी रहता था, एकदम आलसी और कामचोर।

उसकी बीबी-बच्चे अक़्सर फ़ाके करते।

बीबी जब कामचोरी के लिए उसे डांटती-फटकारती तो वह कहता, "तुम कोई फ़िक्र, कोई ग़म न करो! बेशक हम आज ग़रीब हैं, मगर जल्द ही अमीर हो जाएंगे।"

"वह कैसे?" उसकी बीबी हैरान होकर पूछती। "यह हो ही कैसे सकता है जब तुम उंगली तक नहीं हिलाते और इसी तरह निठल्ले बैठे रहकर हर दिन गुज़ार देते हो?"

मगर वह फिर यही दोहराता, "थोड़ा सब्र करो! वह दिन ज़रूर आएगा जब हम मालामाल हो जाएंगे।"

बीबी-बच्चे इंतज़ार करते रहे, मगर कोई तब्दीली न हुई और वह ग़रीब के ग़रीब ही बने रहे।

"अब इंतज़ार करना बिल्कुल बेकार है," बीबी ने कहा। "अगर यही हालत रही तो हम भूखों मर जाएंगे।"

आख़िरकार इस आदमी ने किसी अक़्लमंद के पास जाकर यह पूछने का फैसला किया कि मैं ग़रीबी से कैसे अपना पिंड छुड़ा सकता हूं। उसने सफ़र की तैयारी की और रवाना हो गया।

वह तीन दिन और तीन रातों तक चलता रहा। रास्ते में उसे एक भेड़िया मिला, दुबला-पतला, हड्डियां निकली हुईं।

"कहां जा रहे हो, भले मानस?" भेड़िए ने पूछा।

"किसी अक़्लमंद आदमी के पास यह जानने के लिए जा रहा हूं कि मैं अमीर कैसे बन सकता हूं।" उसने जवाब दिया।

भेड़िए ने उसकी पूरी बात सुनने के बाद कहा, "तुम जा तो रहे ही हो, मेहरबानी कर उस अक़्लमंद आदमी से यह भी पूछ लेना कि मैं क्या करूं। बात यह है कि पिछले तीन साल से मेरे पेट में सख़्त दर्द रहता है। मैं दिन-रात इसी से परेशान रहता हूं। शायद वह यह बता सके कि कैसे मैं इससे निजात पा सकता हूं।"

"अच्छी बात है," उसने कहा, "मैं पूछ लूंगा।"

वह आगे चल दिया।

वह तीन दिन और तीन रातों तक चलता रहा। आख़िर उसे सड़क के किनारे आम का एक पेड़ नज़र आया।

"कहां जा रहे हो, भले मानस?" पेड़ ने पूछा।

"किसी अक़्लमंद आदमी के पास यह जानने के लिए कि कामकाज किए बिना मज़े की ज़िंदगी कैसे गुज़ारी जा सकती है।"

"मेहरबानी कर उससे यह भी पूछ लेना कि मैं क्या करूं," पेड़ ने कहा। "मुझ पर फूल आते हैं, मगर वे फौरन ही मुरझाकर गिर जाते हैं और मुझ पर फल कभी नहीं लगते। उस अक़्लमंद आदमी से पूछना कि ऐसा क्यों होता है।"

"अच्छी बात है, मैं पूछ लूंगा।" उसने जवाब दिया और वह आगे बढ़ चला। वह फिर तीन दिन और तीन रातों तक चलता रहा। आख़िर एक गहरी झील के तट पर पहुंचा।

अचानक एक बड़ी-सी मछली पानी में से सिर बाहर निकालकर बोली, "भले मानस, कहां जा रहे हो?"

"किसी अक़्लमंद आदमी के पास, उसकी सलाह और मदद लेने।"

"मेहरबानी कर मेरी ओर से भी कुछ पूछ लेना। पिछले सात साल से मेरे गले में सख़्त दर्द रहता है। उससे कहना कि इसका इलाज बता दे।"

"अच्छी बात है, पूछ लूंगा।" उसने कहा और आगे चल दिया।

वह तीन दिन और तीन रातों तक चलता रहा। आख़िर झाड़ियों के एक झुरमुट के क़रीब पहुंचा। वहां उसे एक झाड़ी के नीचे लंबी सफ़ेद दाढ़ी वाला एक बुज़ुर्ग बैठा दिखाई दिया। बुज़ुर्ग उसे देखकर मुस्कराया। कामचोर ने सोचा शायद यही अक़्लमंद आदमी है।

उसने बुज़ुर्ग से कहा, "शायद आप ही वह अक़्लमंद आदमी हैं, मैं जिसकी तलाश में हूं?"

"हां, मैं ही हूं वह आदमी," बूढ़े ने जवाब दिया। "जल्दी से बताओ कि तुम मुझ से क्या चाहते हो?"

उसने बूढ़े को बताया कि वह क्यों आया है और क्या चाहता है।

"इसके अलावा तुम मुझसे और कुछ नहीं पूछना चाहते?" अक़्लमंद आदमी ने कहा।

"हां, पूछना तो है," उसने जवाब दिया और फिर भेड़िए, आम के पेड़ और मछली की तकलीफ़ों का ज़िक्र किया।

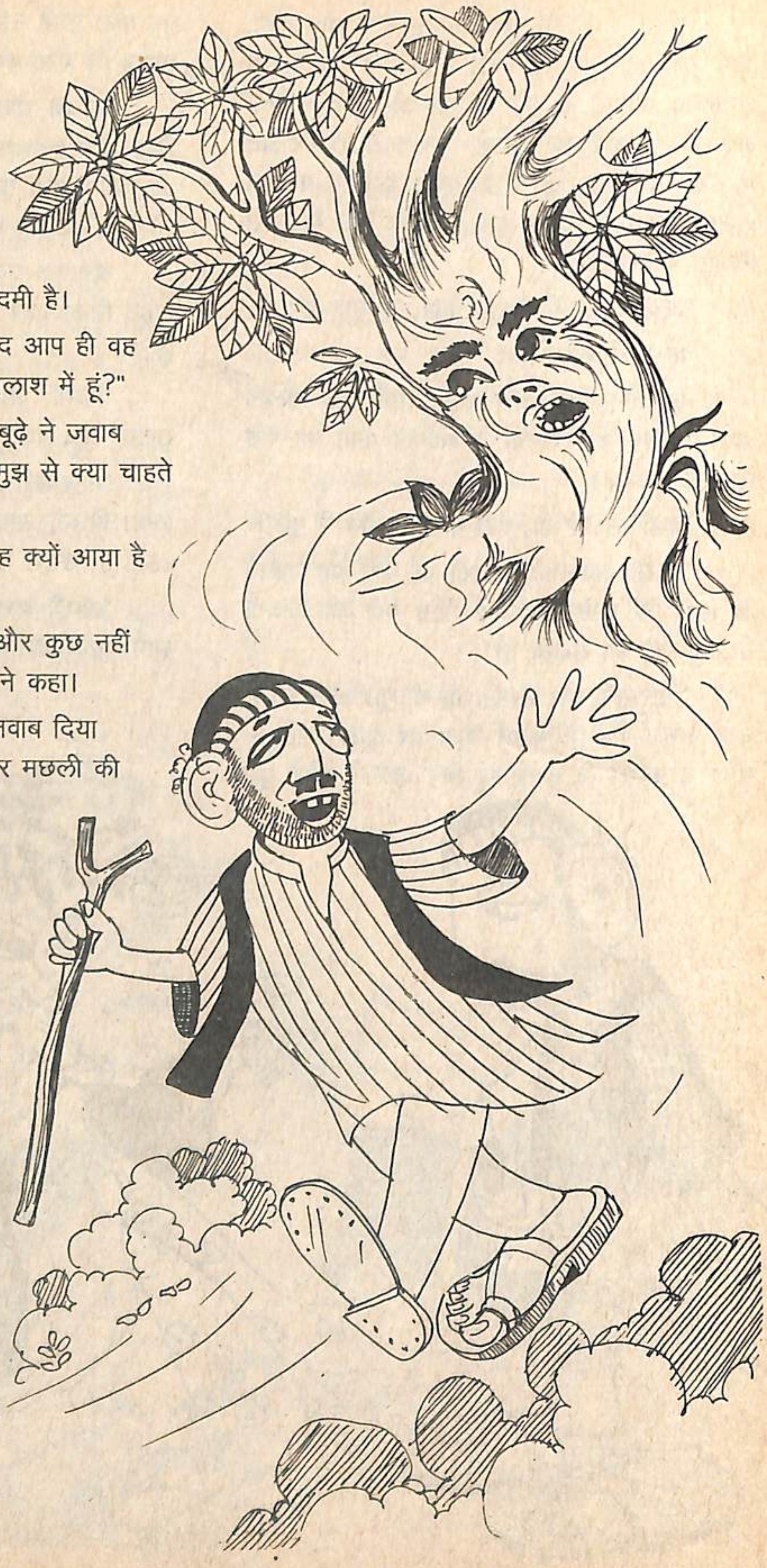

तब अक़्लमंद आदमी ने कहा, "मछली के गले में एक बहुत बड़ा हीरा फंस गया है। हीरा निकाल लेने पर मछली का दर्द दूर हो जाएगा। आम के पेड़ के नीचे चांदी से भरा एक बर्तन दबा हुआ है। इस बर्तन को जैसे ही वहां से निकाल लिया जाएगा, वैसे ही उस पेड़ के फूल मुरझाना बंद कर देंगे और उस पर फल लगना शुरू हो जाएंगे। जहां तक भेड़िए का संबंध है, तो उसे उस कामचोर को हड़प जाना चाहिए जो सबसे पहले उसके सामने आ जाए। उसके पेट का दर्द तभी दूर होगा।"

"और मेरी प्रार्थना?" उसने पूछा।

"सो तो स्वीकार की जा चुकी है। अब जाओ!" बुज़ुर्ग ने जबाव दिया।

उसकी ख़ुशी का कोई ठिकाना न रहा। उसने अक़्लमंद आदमी से और कुछ भी नहीं पूछा और घर की ओर चल दिया।

चलाचल, चलाचल वह उस झील के तट पर पहुंचा जहां वह मछली बेसब्री से उसका इंतज़ार कर रही थी।

"तो अक़्लमंद आदमी ने मेरे लिए क्या सलाह दी है?" मछली ने पूछा।

"तुम्हारे गले में एक बड़ा-सा हीरा फंसा हुआ है। उसके निकलते ही तुम्हारा दर्द दूर हो जाएगा।" इतना कहकर वह चलने को तैयार हुआ।

"भले मानस, मुझ पर तरस खाओ," मछली चिल्लाई। "उस हीरे को मेरे गले से निकाल लो! इससे मेरा दर्द दूर हो जाएगा और तुम्हें हीरा मिल जाएगा!"

"ओह, मुझे क्या लेना है इस पचड़े में पड़कर!" उसने कहा, "मैं तो उंगली हिलाए बिना ही मालामाल हो जाऊंगा!" इतना कहकर वह अपनी राह चल दिया।

चलाचल, चलाचल वह आम के पेड़ के पास पहुंचा। उसे देखते ही पेड़ की सभी शाखाएं झूलने लगीं, उसके पत्ते सरसराने लगे।

"कहो तो, अक़्लमंद आदमी ने मेरी तकलीफ़ का क्या इलाज बताया है?" उसने पूछा।

"उसने कहा है कि तुम्हारी जड़ों के नीचे चांदी से भरा हुआ एक बड़ा-सा बर्तन दबा पड़ा है। उसे बाहर निकालना ज़रूरी है। तब तुम्हारे फूल नहीं मुरझाएंगे और तुम पर आम लगने शुरू हो जाएंगे।"

इतना कहकर आगे जाने लगा।

तब पेड़ ने गिड़गिड़ाकर कहा, "मेहरबानी कर मेरी जड़ों के नीचे से चांदी से भरी हुई हांड़ी निकाल लो। इस तरह तुम्हारा भी भला हो जाएगा, तुम्हें चांदी मिल जाएगी।"

"ओह नहीं, मैं यह मुसीबत उठाने को तैयार नहीं हूं। अक़्लमंद ने कहा है कि मैं तो हर सूरत में अमीर हो जाऊंगा।" इतना कहकर वह आगे चल दिया।

वह चलता गया, चलता गया और आख़िर भेड़िए से उसकी मुलाकात हुई। भेड़िया उसे देखते ही बेसब्री से कांपने लगा, "हां, तो अक़्लमंद आदमी ने मेरे लिए क्या सलाह दी है? मुझे झटपट बता दो, इंतज़ार न कराओ!..."

"जो कामचोर सब से पहले सामने आ जाए, उसे ही हड़प जाओ। तुम्हारे पेट का दर्द फ़ौरन ग़ायब हो जाएगा।" उसने कहा।

भेड़िए ने उसे धन्यवाद दिया और फिर यह पूछा कि रास्ते में उसने क्या कुछ देखा, क्या कुछ सुना। उसने मछली और पेड़ के साथ हुई अपनी मुलाक़ातों का ज़िक्र किया और यह बताया कि उन्होंने उससे क्या प्रार्थना की थी।

"मगर मैंने उनकी बातों पर कान नहीं दिया। कारण कि मैं तो हर सूरत अमीर हो जाऊंगा।" उसने कहा।

भेड़िए ने यह सब सुना और बहुत ख़ुश हुआ। फिर बोला, "अब मुझे कामचोर की तलाश करने की ज़रूरत नहीं, वह तो ख़ुद ही मेरे पास आ गया है। दुनिया में तुससे बढ़कर कामचोर ढूंढे नहीं मिलेगा।"

भेड़िया उस कामचोर पर झपटा और उसे पूरे का पूरा ही हड़प गया। ❑❑

सभी चित्र : विवेक

(पृष्ठ 22 का शेष)

निर्मल गोयल, प्रेमकुमार, स्मृति कुमारी, **पटना**। दीप्ति पांडे, भटमुरना, **धनबाद**। **सभी बिहार**। सियाराम यादव, **फैजाबाद**। अनंत पाल सिंह, **मुरादाबाद**। **सभी उत्तर प्रदेश**। भवानीसिंह, संजय कुमार, शैलेष, पूर्णिमा, मौसमी, मनीषा, वीणा, चंदा, उषा, इमरान खां, साजिद खां, अनूप, खरीब, हुजीया, पापु, मधुबाई, मीना, **पाली**। राजूदास वैष्णव, अनुराग बी. शर्मा, सुगनराम गौड़, चिमनलाल रावत, रंजन मीना वैष्णव, शंकर लाल सुथार, प्रमोद गौड़, मुकेश रावल, सुरेश हटेला, चंद्रप्रकाश सोनी (देसूरी), **पाली**। गंगाराम कोली (कालेड़ा), जीतेंद्र वंशीलाल (गूजरवाड़ा), **दौसा**। प्रवीण नाग, **जयपुर**। **सभी राजस्थान**। चंद्रपाल, राजपाल, अनु, (करेला) **जींद**। **हरियाणा**।

माथापच्ची

(1)

अशोक और शफ़ीक एक बस के इंतज़ार में खड़े थे खड़े-खड़े एक घंटा हो गया। इस दौरान दोनों सड़क पर आने जाने वाले लोगों को गिनते रहे। शफ़ीक तो बस स्टॉप पर खड़ा था और अशोक सड़क पर आगे-पीछे टहल रहा था। किसकी गिनती में अधिक लोग आएंगे?

(2)

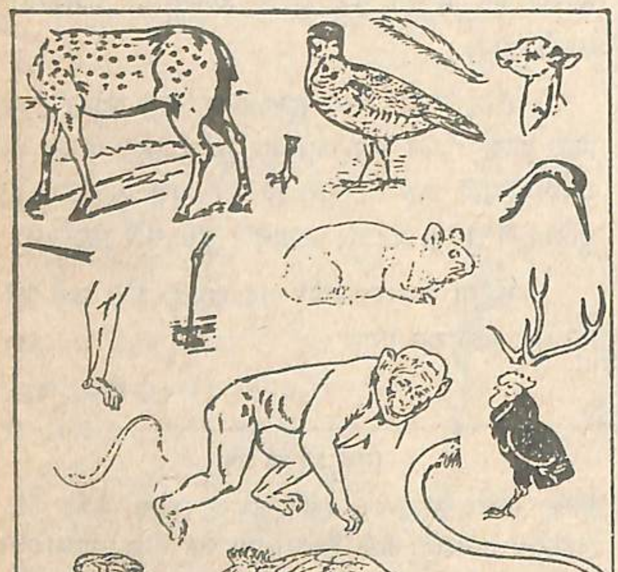

इस चित्र में कुछ पक्षियों और जानवरों के अलग-अलग अंगों के चित्र हैं। ज़रा ढूंढो तो कौन-सा अंग किस जानवर का है। पेंसिल से निशान लगाओ।

(3)

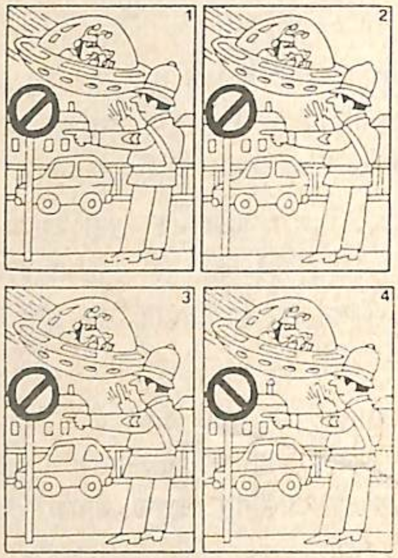

चित्र नं. 2, 3, और 4, चित्र नं. 1 की नकल हैं। लेकिन अगर इन सबको नं. 1 चित्र से मिलाओगे तो पता चलेगा कि हर चित्र में तीन-तीन गलतियां हैं और अलग-अलग तरह की! खोजो तो जानें!

(4)

मेरे पास सौ रूपए का एक नोट था। मैंने एक दुकान वाले से उसके खुल्ले नोट लिए। उसने मुझे खुल्ले नोट दे तो दिए, पर उनकी कुल संख्या पचास थी। वास्तव में मुझे दो-दो के कुछ नोट चाहिए थे, लेकिन मज़े की बात यह थी कि उन पचास नोटों में दो का एक भी नोट नहीं था। क्या तुम बता सकते हो कि इन पचास नोटों में कौन-कौन से नोट हैं और उनकी संख्या कितनी है।

(5)

30 सें.मी. लंबा कपड़े का टुकड़ा है। इसके तीन बराबर हिस्से एक ही काट में कैसे करेंगे?

(6)

मुन्नू के घर उसकी मौसी आई। उन्होंने देखा खटिया पर कोई चादर ओढ़कर सो रहा है। उन्होंने मुन्नू से पूछा कि, 'खटिया पर कौन सो रहा है?'

मुन्नू बोला, 'सो रहे आदमी का पिता मेरे पिता का बेटा है।'

मुन्नू की मौसी तो चक्कर में पड़ गई, क्योंकि मुन्नू का कोई भाई-बहन तो था नहीं। फिर यह कौन है? तुम भी सोचो!

(7)

सलीम, मोहन और हरीश, तीनों पक्के दोस्त हैं और पुलिस विभाग में नौकरी करते हैं। इनमें से एक इंस्पेक्टर है, एक हवलदार और एक सिपाही इंस्पेक्टर सबसे ठिगना है और अविवाहित। मोहन, हरीश का साढ़ू है और तीनों में सबसे लंबा। मझौले क़द वाला हवलदार नहीं है।

इस इबारत के आधार पर बताओ कि कौन किस पद पर है और किस क़द का?

वर्ग पहेली-24

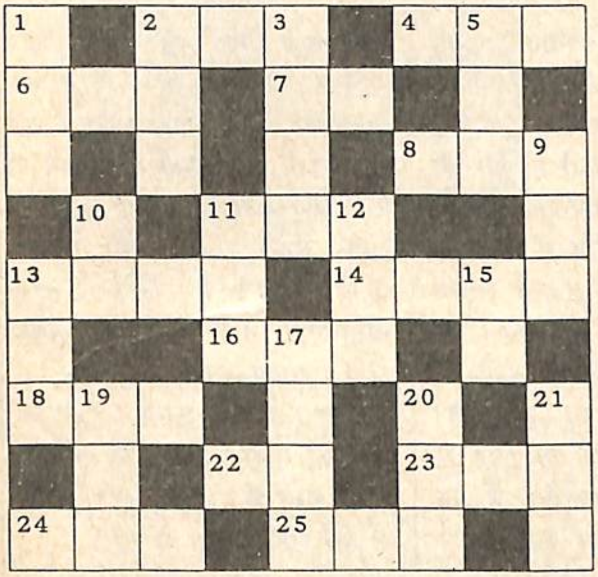

संकेत : बाएं से दाएं

2. धूर्त या कपटी (3)
4. समुदाय (3)
6. बोलने का तरीक़ा (3)
7. आधी उल्टी रज़ामंदी में रूस के प्राचीन बादशाहों की उपाधि (2)
8. सवाल हल करने में गला भी है। (3)
11. केवल (3)
13. बंदर जिसका स्वाद नहीं जानता (4)
14. बाघ की खाल (4)
16. नथ मना है पहनना, में ठहरना (3)
18. चंबल घाटी को डाकुओं के अलावा किस चीज़ के लिए जाना जाता है। (3)
22. काग़ज़ भी, गुस्सा भी (2)
23. हम के बीच आधी कील ठोक दो तो यूनानी दवा देने वाला मिल जाए (3)
24. सिक्कों की आवाज़ (3)
25. बहुत अधिक (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. पानी रखने का एक बर्तन (3)
2. इस महीने की पहली तारीख़ को किया जाता है (3)
3. मंद-मंद हवा चलने में ज़ार की सहमति (4)
5. वातावरण (3)
9. पालकी उठाने वाले (3)
10. पृथ्वी का इकलौता प्राकृतिक उपग्रह (2)
11. जो कहा न जा सके (3)
12. दबाव डालना (3)
13. एक पौधा, जिसकी जड़ भी खाई जाती है और पत्ते भी (3)
15. मधुमक्खी के भाई-बहन, जो हमारे घर में ही रहते हैं (2)
17. महान दावत में हाथी को वश में रखने वाला (4)
19. नहन की उलट-पलट में नष्ट करना (3)
20. आंगन (3)
21. 'यह मत करो' की उलट-पुलट में एक अलंकार(3)

(दीपक तिवारी, पेंड्रा, बिलासपुर, म.प्र. द्वारा भेजी पहेली पर आधारित।)

☐ वर्ग पहेली के सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को तीन माह तक चकमक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से नहीं काटें। उसमें जो शब्द आने वाले हों, उन्हें संकेत के ही नंबर देकर लिख दें। वर्ग पहेली-24 का हल जून, 93 के अंक में देखें।

सवालीराम

□क्या जुंएं पसीने से पैदा होते हैं?

□ नहीं, जुंएं पसीने से पैदा नहीं होते। अन्य कई कीटों की तरह जुंएं भी अंडों से ही पैदा होते हैं। जुंएं के जीवन चक्र की शुरूआत वयस्क मादा द्वारा अंडे देने से होती है। अंडे जिन्हें 'लीख' कहा जाता है, जब फूटते हैं तो इनमें से लार्वा निकलते हैं। जुंएं के लार्वा की तीन अवस्थाएं होती हैं। विकसित होने की प्रक्रिया में लार्वा इन अवस्थाओं को पारकर वयस्क जुंआं बन जाता है। जीवनचक्र का चित्र देखो।

जुंआं एक परजीवी है। ख़ून से ही इसका पेट भरता है- चाहे वह पशु-पक्षी का हो या फिर मनुष्य का। ज़िंदा रहने के लिए इन्हें जिस गर्मी और नमी के वातावरण की ज़रूरत होती है वह भी जानवरों, पक्षियों के शरीर पर या फिर मनुष्य के घने बालों में ही मिल पाता है। अंडे से निकले लार्वा भी पसीने और धूल-मिट्टी वाले माहौल में ही जल्दी पनपते हैं।

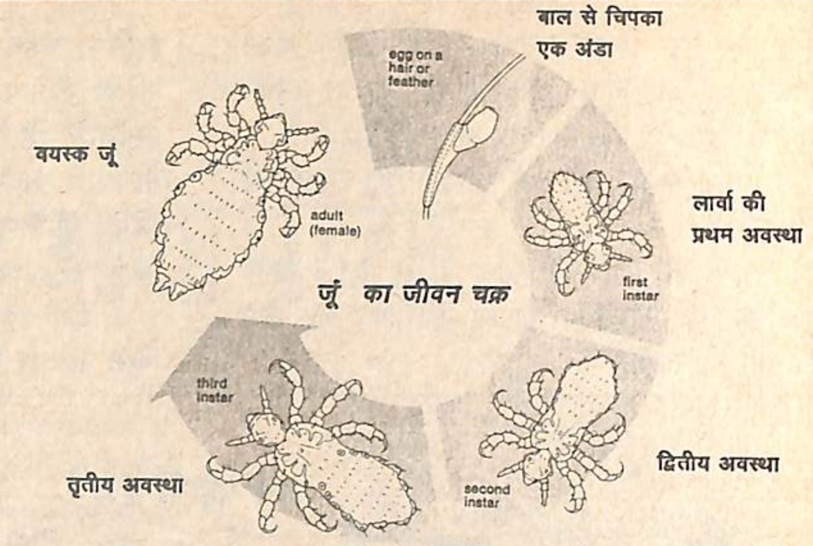

संभवतः इसीलिए यह धारणा बन गई है कि जुंएं पसीने से पैदा होते हैं। लेकिन तुम यह आज़माकर देख सकते हो कि जो व्यक्ति अधिक साफ़-सफ़ाई से रहता है, उसके सिर में भी जुंएं हो सकते हैं। अब सवाल उठता है कि ये जुंएं कहां से आए? हम अपने दोस्तों, रिश्तेदारों आदि के साथ उठते-बैठते या सोते हैं। अगर इनमें से किसी के सिर में जुंएं हैं तो बहुत संभावना है कि वे हमारे सिर में आ जाएं। और हमें पता भी नहीं चले और चलता भी नहीं है। अगर हम साफ़-सफ़ाई का बराबर ध्यान रखें तो इनकी जनसंख्या को बढ़ने से रोक सकते हैं। अगर ये संख्या में नहीं बढ़ें और इन्हें पनपने, जीवित रहने के लिए उपयुक्त वातावरण नहीं मिले तो हमारे लिए उनका सफ़ाया करना भी आसान होगा। शायद इसीलिए जुंएं को पसीने और मैल से जोड़ दिया गया है, ताकि जुंएं के डर से हम साफ़-सफ़ाई से रहें।

जूं जो हमारे सिर में रहती है

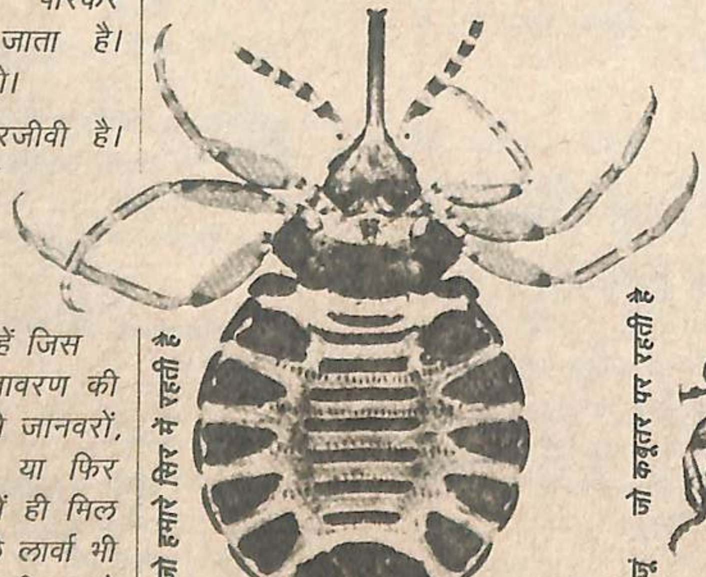

जूं जो कबूतर पर रहती है

चर्चा किताबों की

हमारे वैज्ञानिक

ईसा के तीन हज़ार साल पहले भारतीय उपमहाद्वीप में विज्ञान की उन्नति आश्चर्यजनक थी। प्राचीन भारत के विद्वानों को विज्ञान के अनजान और गूढ़ तथ्यों को सुलझाने में अभूतपूर्व सफलता मिली थी। गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, खगोल विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान आदि में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। अंक गणित में शून्य संख्या की कल्पना भारतीय वैज्ञानिकों की ही देन है।

'हमारे वैज्ञानिक' में सुश्रुत, चरक से लेकर आधुनिक भारत तक के ऐसे ही 47 वैज्ञानिकों का जीवन परिचय दिया गया है।

किताब : हमारे वैज्ञानिक
लेखक : दिलीप मधुकर सालवी
प्रकाशक : चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट, नेहरू हाऊस-4, बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली
मूल्य : बारह रुपए

इस अंक से हम यह नया कालम शुरू कर रहे हैं। इसमें हम बच्चों के लिए प्रकाशित नई किताबों की चर्चा करेंगे। लेखक/प्रकाशक, आदि चर्चा के लिए अपनी किताब की दो प्रतियां भेजें।

गुड्डो फिर भी हंसती है!

यह चार छोटे नाटकों का संग्रह है। इस संग्रह का एक नाटक ***'बिना हिसाब का एक दिन'*** चकमक के इसी अंक में प्रकाशित हुआ है। एक अन्य नाटक ***'कैसी-कैसी ख़बरें'*** चकमक के दिसंबर, 92 अंक में प्रकाशित हुआ था।

'गुड्डो फिर भी हंसती है!' नाटक में केवल एक पात्र है- गुड्डो! दस-बारह साल की इस लड़की का एक पैर पोलियोग्रस्त है। गुड्डो अपने-आप से बातें करती है। बीच-बीच में उसे मम्मी, पापा, सहेली, दादी, मदारी, शिक्षक आदि की कही बातें याद आती हैं, जिन पर वह अपना प्यार, गुस्सा जताती है।

'कथा रावण की' नाटक में बच्चों को, मारने वाले शिक्षक, मिलावट करने वाले दुकानदार, बासी मिठाई बेचने वाले हलवाई आदि में रावण दिखाई देता है। वे रावण से इनकी तुलना करते हैं।

नाटक रोचक और सरल भाषा में हैं। थोड़ी-सी तैयारी के बाद बिना किसी ताम-झाम के इन्हें खेला जा सकता है।

नाटक संग्रह : गुड्डो फिर भी हंसती है
लेखक : योगेन्द्र दवे
प्रकाशक : चर्चा प्रकाशन, ब्रह्मपुरी-पीपलिया, जोधपुर-342001
मूल्य : बारह रुपए

❑ राजेश उत्साही

क्या कहती है चिड़िया?

पूछ रही गुड्डू से गुड़िया।
क्या कहती हम सबसे चिड़िया?
प्रथम किरण के संग-संग यह
आंगन में आ जाती है।
कभी फुदकती, चीं-चीं करती
प्रतिदिन हमें जगाती है।
तनिक न आलस करती चिड़िया।
कभी झोपड़ी, कभी महल के
दाने खा खुश होती है।
मिला पेटभर, नहीं मिला तो
भी यह सुख से सोती है।
संचय कभी न करती चिड़िया।
जाति-धर्म, भाषा-वाषा से
कभी न मतलब रखती है।
सबके संग एक पेड़ पर
मिल जुलकर यह रहती है।
झंझट कभी न करती चिड़िया।
कभी शिवाला मस्जिद गिरजा
गुरूद्वारे भी जाती है।
ईश्वर अल्ला गॉड ग्रंथ का
भेद न मन में लाती है।
हमसे तो अच्छी यह चिड़िया।
सबका एक बनाने वाला
जिसकी हम संतान सभी।
दीवारों में क़ैद न रहता
जग का मालिक मान कभी।
नेक बनो बस कहती चिड़िया।

❑ डॉ. शोभनाथ 'लाल'
चित्र : जया

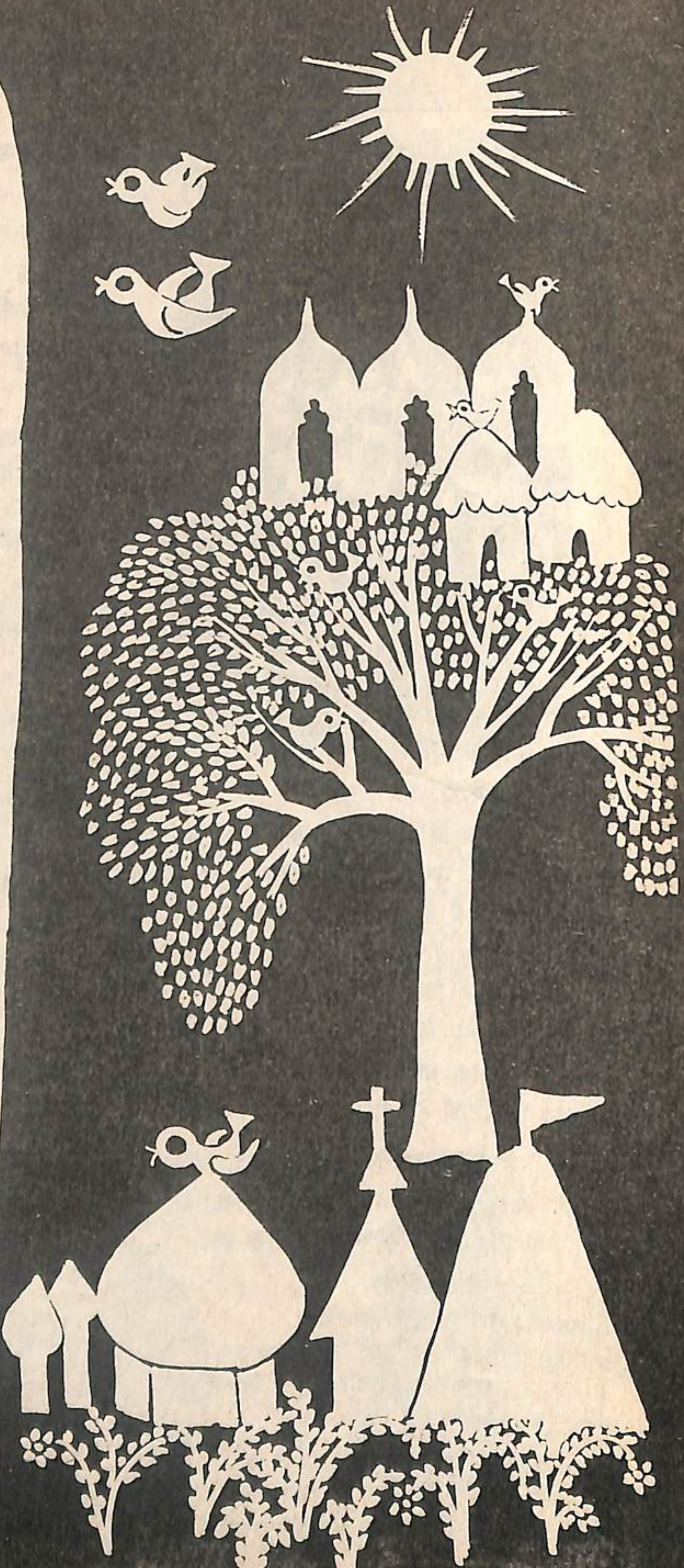

जंगलनामा

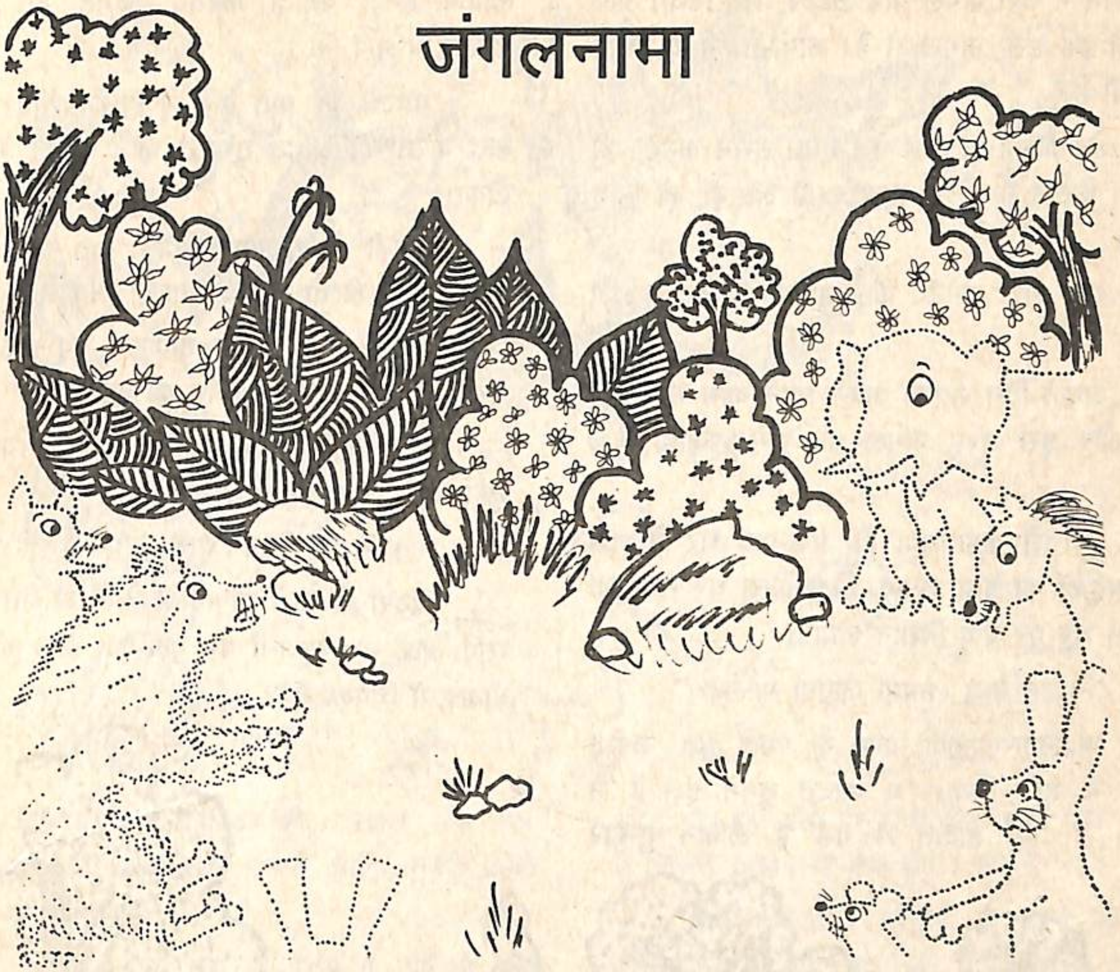

पिछले अंक में तुमने पढ़ा कि तराई के जंगल जहां ख़त्म होते हैं, वहां परना नदी बहती है। नदी के एक तरफ इंसानों की बस्ती है और दूसरी तरफ जंगल। पिछले कुछ दिनों से जंगल में एक अजीब तरह की दहशत छाती जा रही थी। बस्ती के लोग नदी पर एक पुल बना रहे थे। जंगल में तरह-तरह की चर्चाएं थीं। एक दिन ज़ेब्रा ख़ानदान के एक लड़के को बस्ती वालों ने मार डाला। जानवरों ने मिलकर शेर से कुछ करने को कहा। शेर ने सब लोगों से बातचीत करके एक कमेटी बनाई। चीते से कहा कि वह पुल पर नज़र रखे। अगले कुछ रोज़ कुछ न हुआ। पुल बनता रहा। अब आगे पढ़ो...

एक रोज़ एक सफ़ेदा चील आकर टीले पर बैठी और उसने एक लंबी सीटी बजाई। शेर बाहर निकलकर आया। चील ने ख़बर दी, "उस तरफ बस्ती में कुछ बड़े-बड़े पिंजरे लाए गए हैं। कुछ बंद संदूकों में बंदूकें भी आई हैं।"

"बंदूकों की ख़बर तुम्हें किसने दी?"

"कॉकरोच ने चूहे को ख़बर की और वह चूहा ख़बर लेकर भाग रहा था कि एक कौए ने...."

"कौआ बहुत ज़लील पंछी है," शेर बीच में ही बात काट कर बोला, "वह इंसान की जूठन और गंदगी में मुंह मारता है।"

"लेकिन वो बड़ा सयाना है, वह इंसान को भी चकमा दे सकता है।"

"चकमा देने वाले को चालाक कहते हैं, सयाना नहीं। ख़ैर तुम अपनी बात पूरी करो।"

"हां तो चूहे ने उस कागाराम को बताया कि वह एक ज़रूरी ख़बर देने जंगल जा रहा है और ये ख़बर सब पंछी और पशुओं के बारे में है, उनकी

जंगे-आज़ादी के बारे में है। ख़बर सुनकर उस कागाराम ने उसे जंगल पार लाकर छोड़ दिया। और तब से वह इसी जंगल में है। कागाराम ने ये ख़बर मुझे दी है।"

शेर किसी सोच में पड़ गया। उसने कमेटी की मीटिंग बुलाने के लिए बाहर खड़ी लोमड़ी को हुक्म दिया।

रात भर कमेटी की खुफ़िया मीटिंग चलती रही।

अगले दिन सबको अपने-अपने काम सौंप दिए गए और इस तरह जंगल की जंगे-आज़ादी शुरू हुई।

चूहों से कहा गया कि एक-एक घर में घुस कर बंदूकों का पता लगाएं। जिस-जिस घर में बंदूक है उस घर पर एक निशान लगाएं।

"निशान कैसे लगाया जाएगा मालिक?"

"मालिक-मालिक कह के बात मत करो।" हाथी ने डांट दिया। "ये आदत तुमने इंसानों से सीखी है, हम ताक़त में बड़े हैं लेकिन तुम्हारे मालिक नहीं। तुम क़द में हमसे थोड़े-से छोटे हो लेकिन हमसे ज़्यादा करतब जानते हो। इसका मतलब ये नहीं कि..."

"मतलब की बात करो न हाथी प्रसाद! ज़्यादा बात करने की आदत तुम्हारी जाती नहीं," भालू ने टोका।

लोमड़ी ने मज़ाक किया, "बात का बतंगड़ बनाते-बनाते ही तो ये क़द बना है इनका।"

घोड़े ने खुर से पैर ठोककर चुप कर दिया, "ख़ामोश हो जाओ और काम की बात करो।"

हाथीराम ने पूछा, "तुम्हारा सवाल क्या था चूहेलाल?"

"मकानों पर निशान कैसे लगाए जाएंगे?"

"बंदरों से कहो जंगल से केले के पत्ते लेकर जाएं और उन मकानों पर एक-एक केले का पत्ता दीवार से चिपका दें।"

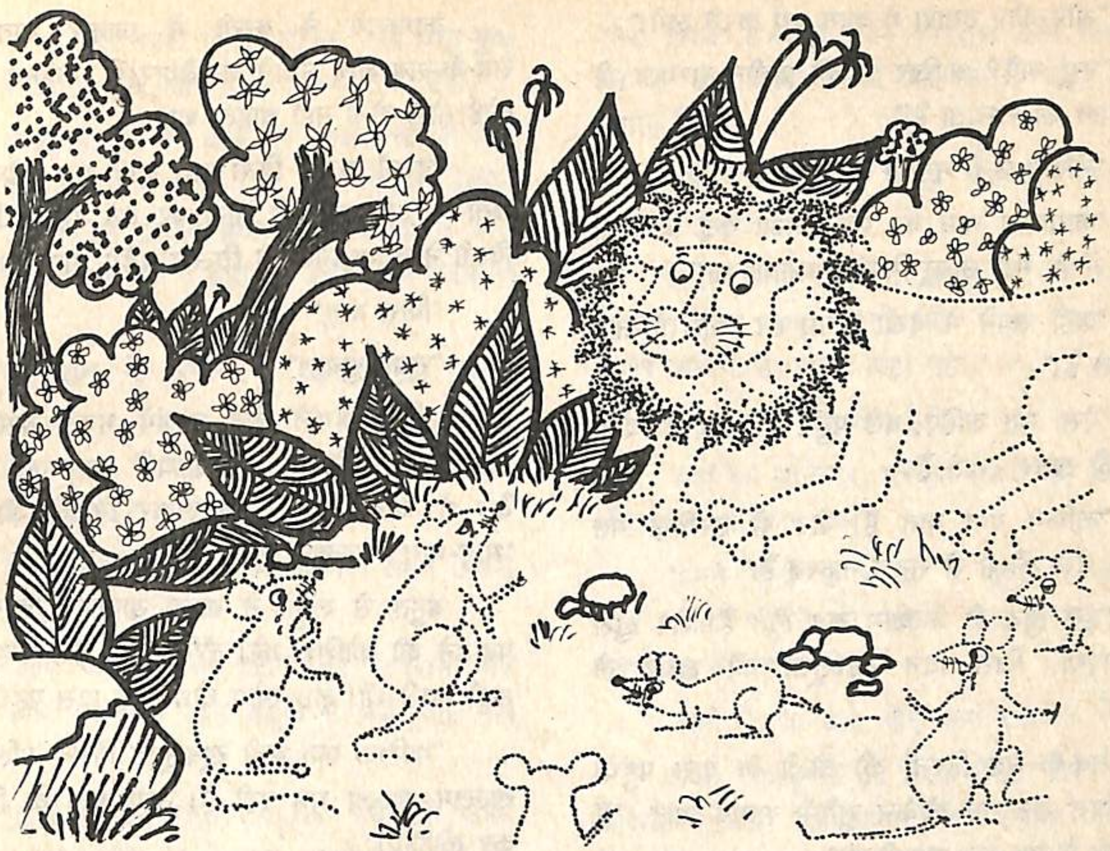

लोमड़ी ने ताकीद की, "ख़ास तौर पर कारतूस की ख़बर लेनी पड़ेगी, ताकि सबसे पहले हम वह तबाह कर दें।"

भालू ने एक राय दी, "क्यूं न चूहों से कहा जाए कि जहां-जहां कारतूस देखें उन्हें कुतर-कुतर कर ख़त्म कर दें।"

सब ने हामी भरी और इस तरह चूहों ने अपना पहला हमला शुरू किया।

दो दिन तक जंगल में कोई ख़बर नहीं आई। सब हैरान थे कि आख़िर हुआ क्या?

तीसरे दिन कुछ बंदरों ने आकर ख़बर की, कि बेशुमार चूहों की लाशें बाहर गलियों में फेंकी जा रही हैं, "लगता है कारतूसों में कोई ज़हरीली दवा मिला दी गई है जिससे चूहों की मौत हो गई है।"

चूहों की बस्ती में मातम छा गया।

रात के वक़्त शेर उनकी बस्ती में गया और छोटे-छोटे चूहों को दिलासा दी, "एक दिन एक चूहे ने जाल कुतरकर मेरी जान बचाई थी। मैं आज भी चूहों का आभारी हूं, ग़म न करो बल्कि हौसले से काम लो। इस वक़्त हम एक बहुत बड़ी जंग लड़ रहे हैं जिसमें तुम्हारे मां-बाप शहीद हुए हैं।"

चीते की आंखें आंसुओं से भरने की बजाय फिर गुस्से से लाल हो उठीं और वह टहलता हुआ वहां से चला गया।

बंदूकों और कारतूसों की पूरी ख़बर अभी तक नहीं मिली थी। चूहे तो बहुत से घरों से फेंके गए थे। कैसे अंदाज़ा लगाया जाए कि कारतूस किस घर में रखे हैं।

रीछ को एक बड़ी पुरानी तरकीब सूझी, "एक हिरनी को बस्ती की गलियों में छोड़ दिया जाए। कोई न कोई तो बंदूक लेकर निकलेगा। बस उसी घर में समझो...."

"अहं! और हिरनी बेचारी को मरवा दिया जाए?" हाथी ने एतराज़ किया।

"बात तो पूरी सुनते नहीं। छतों, मुंडेरों पे कौए बिठा दिए जाएं। जैसे ही कोई बंदूक निकालेगा वह भाग-भाग, चिल्लाकर ख़बर कर देंगे। हिरनी भाग जाएगी और घर का पता चल जाएगा।"

"और कौए हमारा ये काम क्यूं करने लगे।"

"क्यूं नहीं? आख़िर उनकी प्राचीन सभ्यता भी तो जंगल की सभ्यता है!"

"लेकिन उन्हें मनाया कैसे जाए।"

"कागाराम नाम का एक कौआ कई दिनों से जंगल में है, मुझे उल्लू मियां ने बताया था।"

"कहीं सपने में देखा होगा। हर वक़्त तो सोए ही रहते हैं।"

"ऐसा मत कहिए, बड़े पहुंचे हुए पीर हैं। दोनों जहां की ख़बर रखते हैं।"

"लेकिन एक बात है। शेर से हरगिज़ मत कहना, उसे कौओं से सख़्त नफ़रत् है।"

"हम ख़ुद ही ये काम कर लेते हैं। शेर ख़ुश हो जाएगा, जिस दिन कारतूसों की ख़बर ले जाएंगे।"

सब-के-सब हिरनों की टोली के पास पहुंचे। सब हिरन डर गए लेकिन सुनैनी सामने आई, "मैं राज़ी हूं। मैं यह कर सकती हूं।"

बहुत-सी हिरनियों के मुंह से हाय निकल गई। "नहीं-नहीं सुनैनी। तुम मत जाओ। तुम्हारा डेढ़ साल का लड़का है।"

"तो क्या हुआ?" सुनैनी तैयार हो गई।

कागाराम ने बस्ती में जाकर बात की। सब-के-सब शोर मचाने को तैयार थे, लेकिन ख़तरा कोई मोल लेना नहीं चाहता था।

"इसमें ख़तरा किस बात का? सब मुंडेरों पर, छतों पर, बिजली की तारों पर बैठे रहेंगे। जैसे ही किसी ने बंदूक निकाली चिल्ला पड़ेंगे 'भाग भाग'।"

"किस वक़्त"

"सुबह सुबह।"

सुनैनी अगले दिन छलांगें भरती बस्ती की गलियों में घूमने लगी। कौए घरों पर नज़रें जमाए बैठे थे। कहीं कोई बंदूक लेकर निकले और वह 'भाग-भाग' चिल्लाना शुरू करें।

बहुत से लोगों ने खाना डालकर हिरनी को पकड़ने की कोशिश की। लेकिन वह ऐसे कहां हाथ आने वाली थी। कुछ लोग चौधरी के पास पहुंचे।

"मालिक एक बड़ी ख़ूबसूरत हिरनी गलियों में खुल्लम-खुल्ला घूम रही है। आप चल के शिकार कर लीजिए।"

चौधरी जैसे ही हाथ की छड़ी लेकर हवेली से निकले, कौओं ने 'भाग-भाग' चिल्लाना शुरू किया। सब कौए हिरनी की तरफ उड़े।

हिरनी उस जगह से काफ़ी दूर थी। वह

बेतहाशा नदी की तरफ दौड़ी। लेकिन उसी वक्त कुछ लोगों ने जाल फेंका और ज़िंदा पकड़ लिया उसे।

थोड़ी ही देर में घोड़े पर सवार चौधरी वहां पहुंच गए। पकड़ने वालों को पैसे देकर उन्होंने हिरनी को उनसे ख़रीद लिया और रस्सी से बांध के घोड़े के पीछे-पीछे दौड़ाते हुए हवेली की तरफ़ ले गए।

कागाराम ने जंगल में आकर पूरी ख़बर सुनाई।

शेर गुस्से में आ गया, "सुनैनी को किसने बस्ती में भेजा था।"

कमेटी वालों के चेहरे लटक गए। सबने अपनी ग़लती को स्वीकार किया।

"और वह भी उन कौओं की निगरानी में? जिन्हें हाथ की छड़ी और बंदूक में फ़र्क पता नहीं चला?"

गुस्से में शेर बहुत देर तक इधर से उधर टहलता रहा, बहुत देर के बाद उसने एक राय दी, "मेरा ख़्याल है बंदूकें और कारतूस उसी चौधरी के घर में होंगे। वही बस्ती का सबसे बड़ा आदमी लगता है।"

सब ने फ़ौरन हां में हां मिलाई, "हमारा भी यही ख़्याल है।"

ऊपर शाख पर बैठे उल्लू ने एक लंबी-सी जमाही लेकर आंखें खोलीं और बोला, "वह सबसे अमीर आदमी है। सबसे बड़ा नहीं।"

"तो सबसे बड़ा कौन है?"

"वहां का थानेदार, मरज़ी चौधरी की चलती है और हुक्म थानेदार का।"

"हमने सुना है बस्ती में कुछ बड़े-बड़े से पिंजरे और बंदूकों की पेटियां आई हैं, कुछ बता सकते हो वे कहां होंगी?"

"थाने में, थानेदार और कहां रखेगा?"

सबने एक-दूसरे की तरफ देखा। शेर ने ऊंची आवाज़ में कहा, "वही जगह सबसे ज़्यादा ख़तरनाक है क्योंकि वहां रात के वक्त भी पहरा रहता है।"

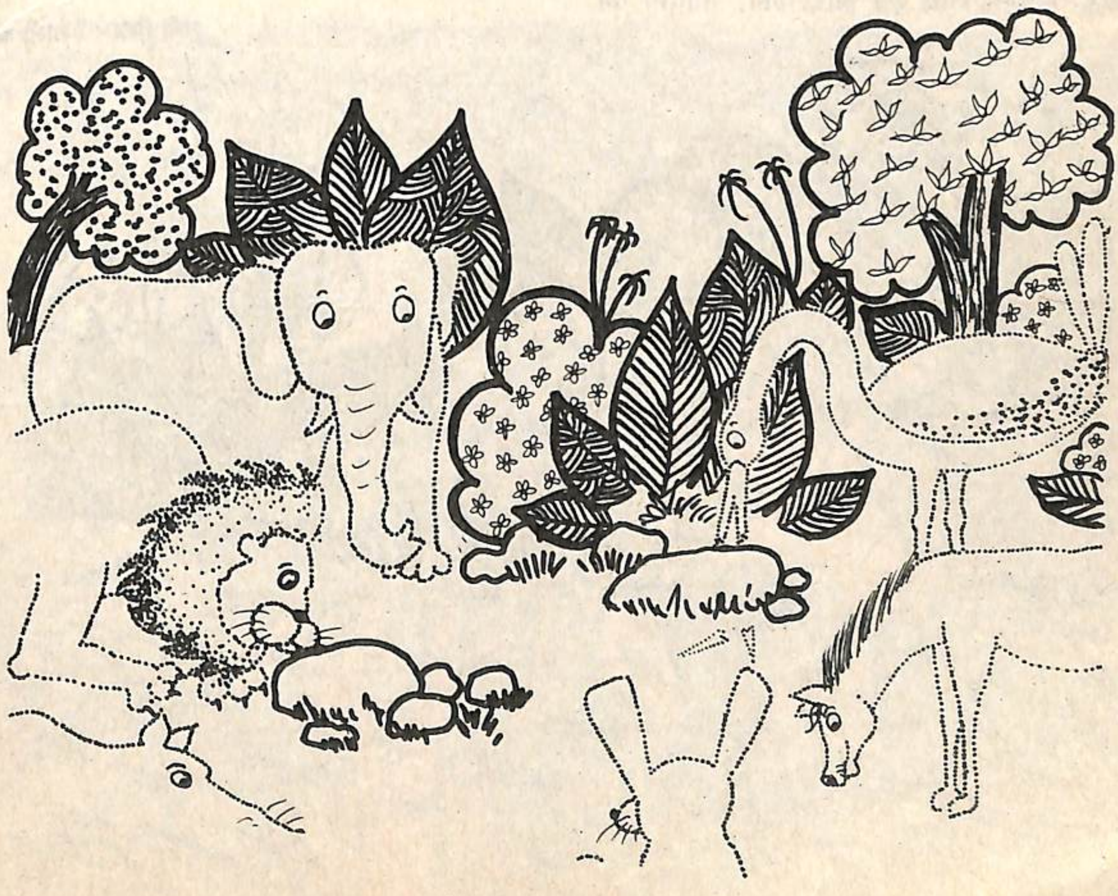

लोमड़ी को कभी-कभी दूर की सूझती है, "पहरा तो सामने रहता है और सामान पीछे के गोदाम में होगा। अगर उस का दरवाज़ा खोला जा सके।"

उल्लू मियां बोले, "आप भी अजीब बात करती हैं लोमड़ी बी। दरवाज़ा क्या चाबी से खोलेंगी आप? यूं कहिए अगर दरवाज़ा तोड़ा जा सके तो।"

हाथी फ़ौरन तैयार हो गया, "मैं तोड़ूंगा वह दरवाज़ा। अगर इंसानों के लिए हम किलों के दरवाज़े तोड़ सकते हैं तो अपने लिए क्या एक गोदाम का दरवाज़ा नहीं गिरा सकते?"

शेर बब्बर ने मना कर दिया, "तुम कीड़े-मकोड़े नहीं हो कि छुपकर निकल जाओगे। पकड़ लिए गए तो....?"

"लेकिन मैं रात के वक़्त जाऊंगा।"

"ज़रूरत नहीं," शेर ने हुक्म किया।

लोमड़ी ने दोबारा पूछा, "तो गोदाम का दरवाज़ा कैसे खोलेंगे?"

शेर ने लंबी सांस ली और कहा, "गोदाम का दरवाज़ा चींटी रानी खुलवाएगी।"

"वह कैसे?" सब ने हैरत से शेर की तरफ देखा।

चींटी रानी को बुलवाया गया।

पांच सखियों के साथ वह शेर के सामने हाज़िर हुई। शेर ने सारी स्कीम समझाई।

"रानी! अपने सबसे तेज़ दस्ते को लेकर जाओ और चौधरी के हाथी महाबली को अपने काबू में ले लो। वह चिल्लाएगा, चिंघाड़ेगा लेकिन तुम उस के कान में जाकर रुक जाना और कह देना कि वह तुम्हारे साथ चले और गोदाम का दरवाज़ा तोड़ दे वरना कान में घुसकर तुम उसे मार दोगी। वह यक़ीनन मान जाएगा।"

हैरत से सब जानवरों के मुंह खुले के खुले रह गए।

"वाह! शेर बब्बर ने क्या चाल चली है। मारा भी जाए तो हमारा गद्दार जानवर।"

(अगले अंक में जारी)

❑ **गुलज़ार**

सभी चित्र : वैशाली श्रीवास्तव

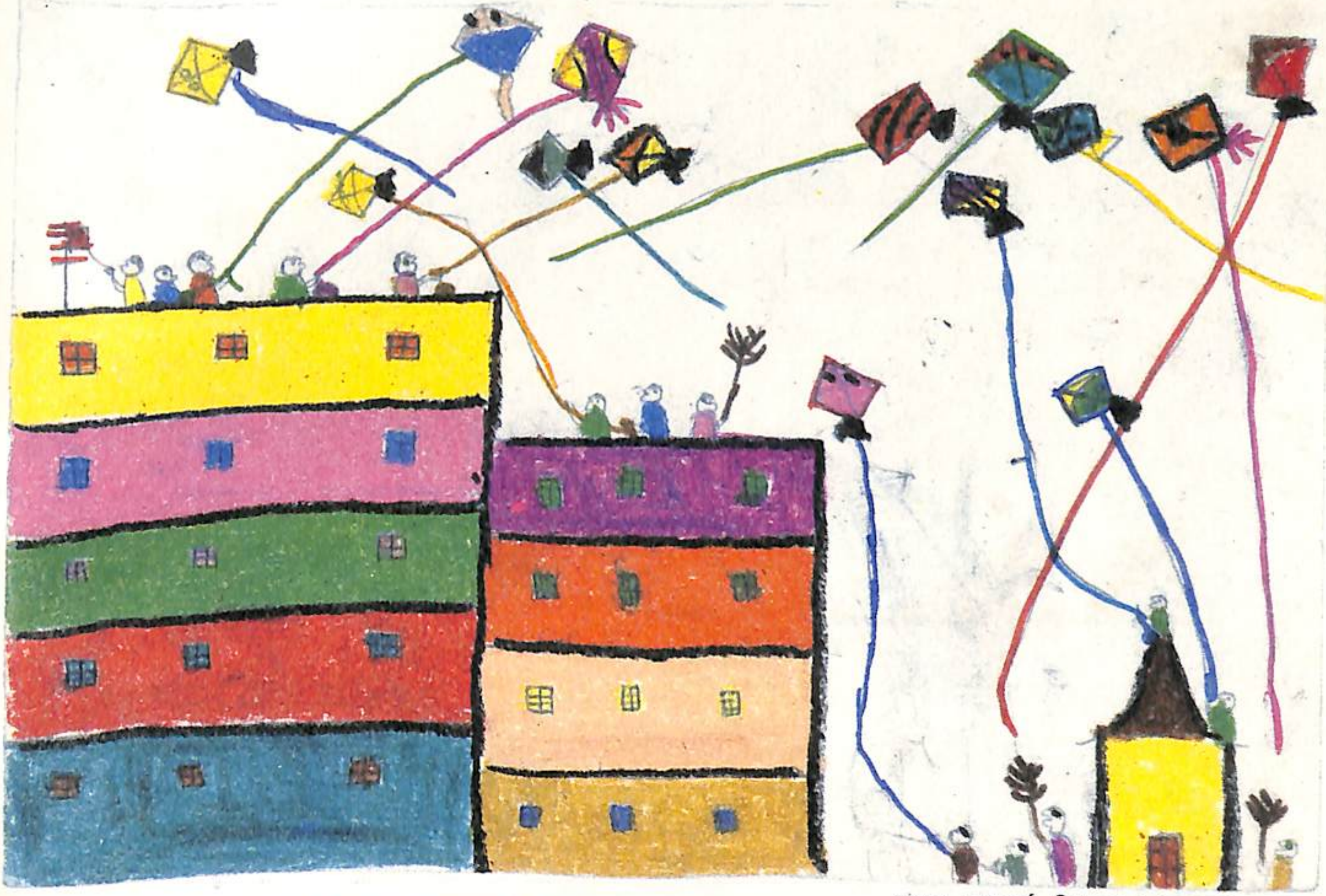

संजना, दस वर्ष, विद्यानगर, भावनगर, गुजरात

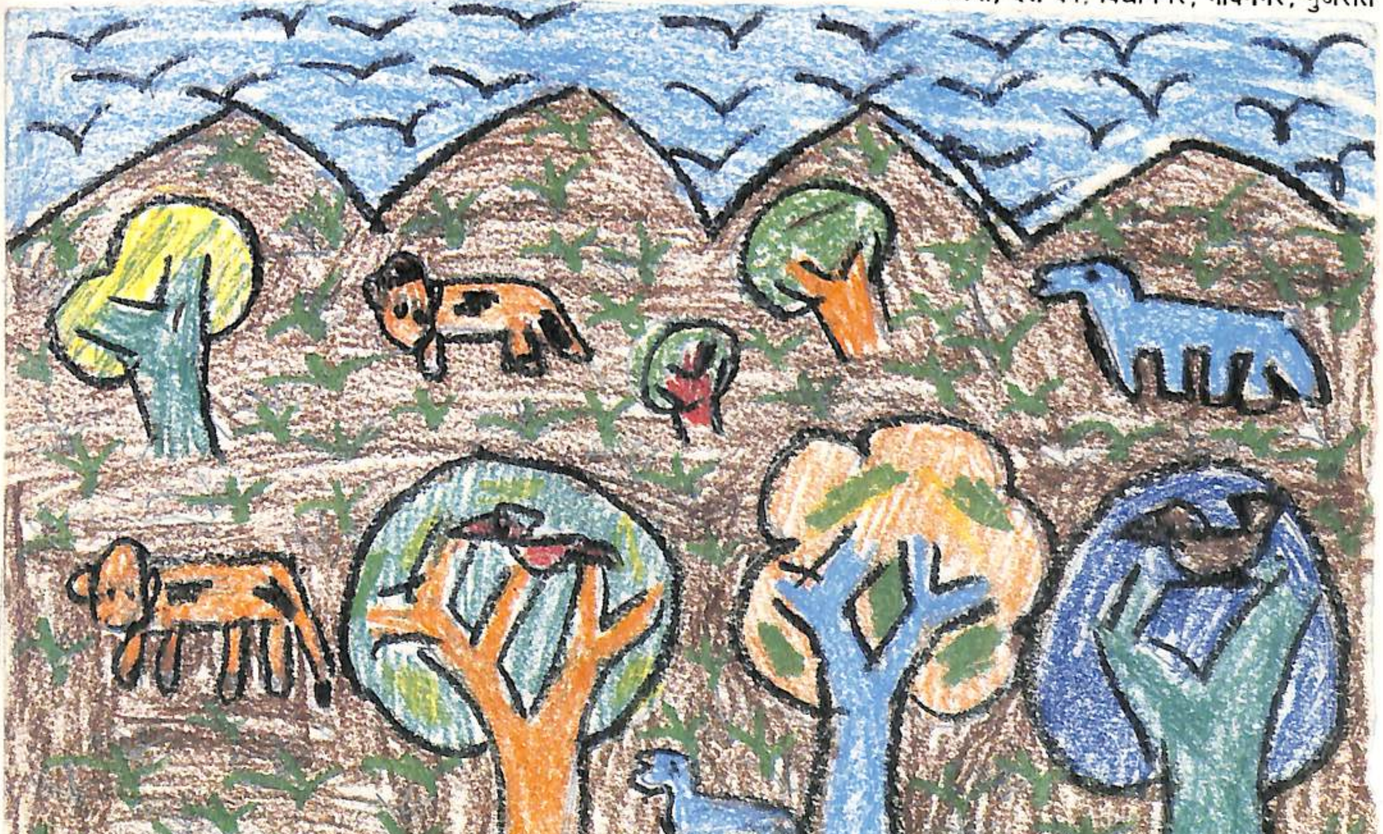

अवनी मेघाणी, भावनगर, गुजरात

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/ 431/93

उर्वशी प्रसाद, छह वर्ष, दिल्ली

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना